वर्ष 4 अंक 1 जनवरी 2020 आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
जे-7 श्रीरामनगर रायपुर छ.ग. CHHHIN/2017/72506

किलोल

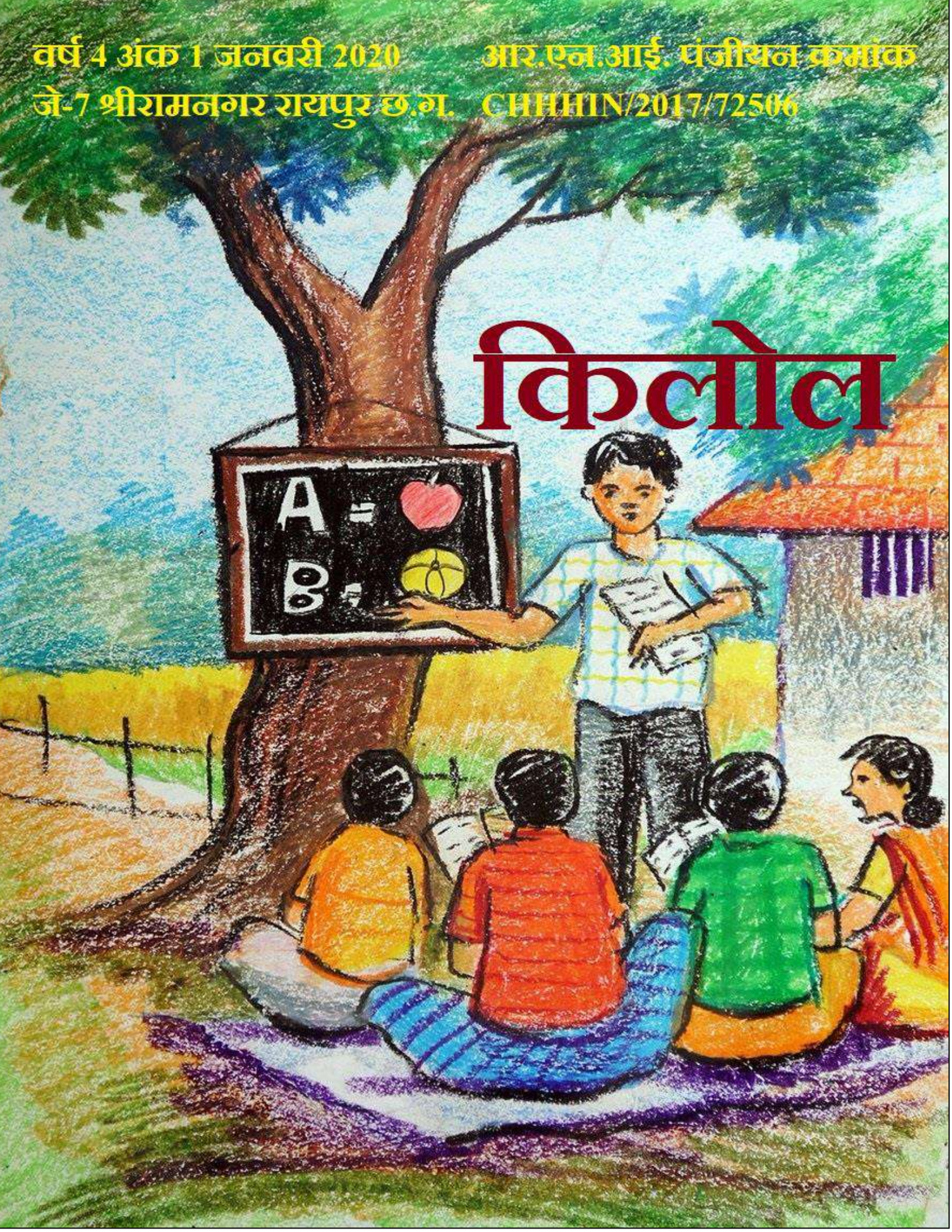

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश एवं
सुधीर श्रीवास्तव

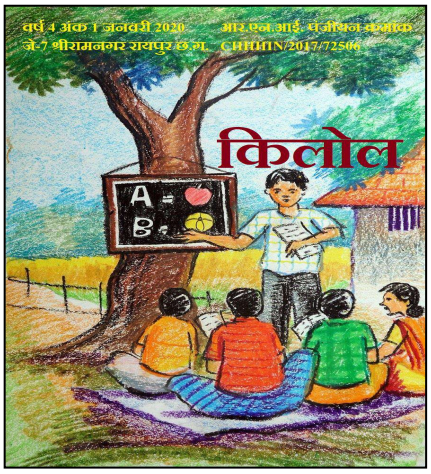

प्यारे बच्चों,

आप सभी को नया साल बहुत शुभ हो. आप निरंतर आगे बढ़ें और दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करें. किलोल इस अंक के साथ अपने प्रकाशन के चौथे वर्ष में प्रवेश कर रही है. निरंतर सहयोग के लिए सभी का आभार है.

पाठकों के आग्रह पर हम किलोल को कागज़ पर छापने का प्रयास कर रहे हैं. इसके लिए वार्षि सदस्यता शुल्क रु 600/- तथा आजीवन सदस्यता शुल्क रु 10,000 रखा गया है. वेबसाइट पर किलोल पहले की तरह नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध रहेगी परन्तु पी.डी.एफ. डाउनलोड के लिये सदस्य बनना अनिवार्य होगा. किलोल के सभी हितैषियों से अनुरोध है कि शीघ्र सदस्यता प्राप्त कर लें. सदस्यता शुल्क जमा करने के अकाउंट विवरण एवं किलोल के ज़िला प्रतनिधि बनने का तरीका अगले पृष्ठ पर विस्तार से दिया गया है. मुझे आशा है कि आपके सहयोग से पत्रिका को लगातार छापना संभव हो पायेगा.

किलोल लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क पढ़ने के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

<u>किलोल की सदस्यता के लिये शुल्क</u>

किलोल के लिये वार्षिक सदस्यता शुल्क 600 रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 10,000 रुपये है.

शुल्क जमा करने के लिये 2 बैंक अकाउंट हैं जिनमें आप नेट-बैंकिंग, पे.टी.एम. आदि ऑन लाइन तरीकों से पैसे जमा कर सकते हैं अथवा नगद शाशि भी जमा करवा सकते हैं. राशि जमा करके कृपया अपनी जमा रसीद की फोटो लेकर उसे मुझे 7000727568 पर वाट्सएप से भेज दें. साथ ही अपना मोबाइल नंबर, नाम और डाक का पूरा पता भी भेजें जिससे पत्रिका आपको डाक व्दारा भेजी जा सके.

<u>अकांउट की जानकारी नीचे दी है</u> -

<u>पहला अकाउंट है</u> -

नाम - डॉ.सुधीर श्रीवास्तव

खाता क्र. - 60349271092

बैंक - बैंक ऑफ महाराष्ट्र

शाखा - शंकरनगर, रायपुर

आईएफएससी कोड - MAHB0001441

<u>दूसरा अकाउंट है</u> -

Tarachand jaiswal

AC 53022710569

Pandri Tarai Raipur

IFSC CODE: SBIN0006085

किलोल के ज़िला प्रतिनिधि

जिला प्रतिनिधि बनने के लिये संपादकों से संपर्क करें.

जिला प्रतिनिधियों के अधिकार

1. उन्हें किलोल का एक फोटो आई.डी. कार्ड दिया जा सकता है.
2. उन्हें किलोल का लेटर पैड दिया जा सकता है.
3. उन्हें किलोल की ओर से सदस्य बनाने का अधिकार दिया जा सकता है.
4. उनके व्दारा अनुशंसित रचनाएं किलोल के ई-एडिशन में प्रकाशन निश्चित रूप से प्रकाशित करने का वादा किया जा सकता है, तथा उनके व्दारा अनुशंसित रचनाओं को कागज़ पर छपे एडिशन में प्राथमिकता देने का वादा किया जा सकता है.
5. उन्हें जिले में किलोल के बैनर पर कार्यक्रम करने का अधि कार दिया जा सकता है.
6. उन्हें अपने विज़िटिंग कार्ड में किलोल जिला प्रतिनिधि छपवाने का अधिकार भी होगा.
7. यदि कोई जिला प्रतिनिधि 30 आजीवन सदस्य बना लेते हैं तो उनके जिले की रचनाओं से किलोल का एक विशेषांक निकाला जायेगा जिसका संपादन वे ही करेंगे.
8. यदि कोई जिला प्रतिनिधि 50 आजीवन सदस्य बना लेते हैं तो उनके जिले में किलोल की ओर से एक साहित्यिक कार्यक्रम किया जायेगा जिसमें उन्हें सम्मानित किया जायेगा.
9. 20 या अधिक आजीवन सदस्य बनाने वाले सभी जिला प्रतिनिधियों का राज्य स्तर पर सम्मान किया जायेगा.

<u>जिला प्रतिनिधियों के कार्य</u> -

1. कम से कम 10 वार्षिक सदस्य बनाने पर उन्हें जिला प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कयिा जायेगा.
2. उन्हें जिला प्रतिनिधि बनने के बाद कम से कम 10 आजीवन सदस्य 1 वर्ष में बनाने होंगे.
3. उन्हें 1 वर्ष के भीतर प्रत्येक ब्लॉक में विकास खंड प्रतिनिधि तथा प्रत्येक संकुल में संकुल प्रतिनिधि बनाना होगा.
4. ब्लॉक प्रतिनिधि एक वर्ष में कम से कम एकआजीवन सदस्य एवं 5 वार्षिक सदस्य बनाएंगे.
5. संकुल प्रतिनिधि एक वर्ष में कम से कम 5 वार्षिक सदस्य बनाएंगे.
6. जिला प्रतिनिधि वर्ष में कम से कम एक कार्यक्रम किलोल पत्रिका के लिए जिले में करवाएंगे.
7. वे अपने जिले से अच्छी रचनाएं एकत्रित करने के लिए जिम्मेदार होंगे.
8. यदि संभव होंगा तो वे जिले से किलोल के लिए विज्ञापन भी एकत्रित करने का प्रयास करेंगे.
9. किलोल को आगे बढाने के सुझाव देंगे.

अनुक्रमणिका

किलोल की सदस्यता के लिये शुल्क 3

किलोल के ज़िला प्रतिनिधि 4

छत्तीसगढ़ के पहिली शहीद - वीर नारायण सिंह 9

मोहन की मेहनत 12

डोर पतंग की 13

सभी के लिए प्रेरणा अरुणा देशमुख 14

कलेक्टर बनना चाहता है भुक्की दान करने वाला कमल यादव 16

समझाओ न शर्मा ऑन्टी को माँ, कि बिटिया को भी चहचहाने दें 18

नवाचार - कहानी के व्दारा बच्चों में सृजनात्मक्ता का विकास 20

बच्चे होते अच्छे 20

कर्मों का फल 22

बुढ़िया की मदद 24

मां बाप को भूलना नहीं 26

गुरु की परीक्षा 28

नंदा मैडम की कक्षा भाग 5 31

कहानी पूरी करो 38

लोमड़ी और बकरी 38

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 39

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी 43

लोमड़ी और सारस 43

चित्र देखकर कहानी लिखो 45

कर्म का फल 45

नवाचार - कक्षा में जन्मदिन मनाना 49

White and black 51

Try again 53

नवाचार - इको क्लब 55
आओ मिल त्यौहार मनाएं 57
आम फलों का राजा है 59
आसमान पर 61
कछुआ और खरगोश 63
कुंडलियाँ - बाबा गुरु घासीदास 67
गिनती 69
गोंदली के भाव 70
चमन ये चमन है ये अपना चमन 71
चलो बाजार 73
छत्तीसगढ़ के महिमा 75
छत्तीसगढ़ी भाखा 78
जंगल में 80
जाड़ ह जनावत हे 82
धूप 84
नववर्ष की शुभकामनाएं 85
पढ़ो आगे बढो 87
पेड़ लगावव (कुकुभ छंद) 88
बासी 89
माटी 92
मिट्ठू भजय 94
मुर्गा बोला 95
मै सरहद पर जाऊंगा 96
लईकुशहा बेरा 97
शहीदों को नमन 100
शेर आया 102

संविधान 103
हमर जीवन के परान 104
चमन ये चमन है ये अपना चमन 107
ईश्वरी कुमार सिन्हा की मधुबनी पेटिंग 110
संकुल जमगहना बैकुंठपुर कोरिया की अंग्रेज़ी कविता 111
संकुल जमगहना बैकुंठपुर कोरिया की अंग्रेज़ी कविता 112
श्रीमती विभा सोनी की छात्रा दिव्या यादव की कविता और चित्र 113
श्रीमती विभा सोनी की छात्रा सोनिया सिंह की कविता और चित्र 114
श्रध्दा सूर्यवंशी की पैंटिंग 115
पहेलियाँ 116
आओ हंस लें 117
भाखा जनउला 118

छत्तीसगढ़ के पहिली शहीद - वीर नारायण सिंह

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

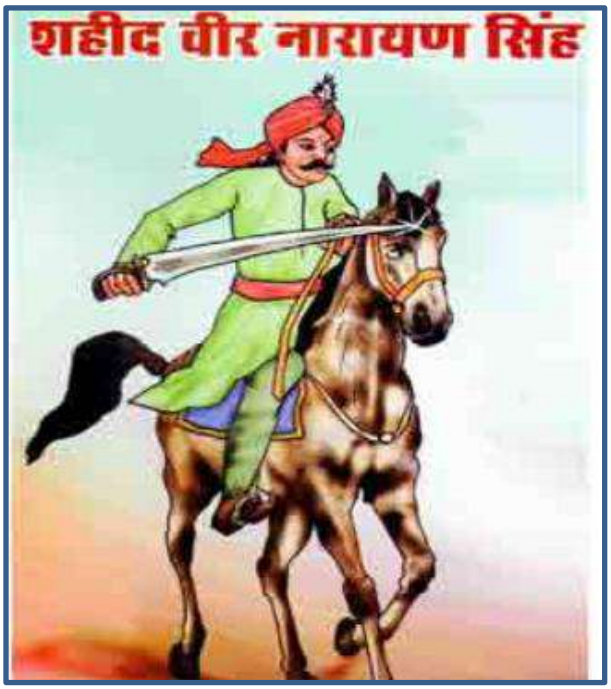

जनम - छत्तीसगढ़ राज के पहिली शहीद वीर नारायण सिंह हा हरे. वीर नारायण सिंह के जनम सन 1795 ई में बलौदा बजार जिला के सोनाखान नाम के एक छोटे से गाँव में होय रिहिसे. वोकर ददा (पिताजी) के नाम श्री रामसाय सिंह रिहिसे.

साहसी लइका - वीर नारायण सिंह हा बचपना ले निडर अउ साहसी लइका रिहिसे. वोहर कोनों से डर्रावत नइ रिहिसे. तीरंदाजी, तलवार बाजी अउ घुड़सवारी में घलो माहिर रिहिसे. वोहर अपन संगवारी मन ला भी ये सब ला सीखाय ताकि मौका परे मा काम आ सके. घनघोर जंगल में घलो वोहर अकेल्ला घुमे बर चल देय.

देशभक्ति के भावना - वीर नारायण सिंह में देश भक्ति के भावना रग रग में भरे

रिहिसे. वोहर अंग्रेज मन के विरोध में हमेशा आवाज उठाइस अउ ओकर खिलाफ आंदोलन भी करीस. ये पाय के अंग्रेज मन ओकर से बहुत चिढहे.

जनता के सेवा - वीर नारायण सिंह हा जनता के सेवा करे बर हमेशा आघू राहय. वोकर से जो भी सहायता बन परे वो जरुर करय. वीर नारायण सिंह के पास एक घोड़ा राहय. वोहर हमेशा घोड़ा में चढ़ के घुमे. एक दिन जब वोहर अपन रियासत में घूमत रिहिसे तब कुछ आदमी मन बताइस के सोनाखान इलाका में एक नरभक्षी शेर आ गेहे. वोहर बहुत आतंक मतावत हे. डर के मारे कोनों आदमी हा काम बुता में नइ जा सकत हे. तब वीर नारायण सिंह हा तुरते तलवार धर के शेर ला खोजे बर जंगल में चल दीस. जंगल में शेर ला कूदा-कूदा के मार डरीस. जनता मन बहुत खुश होइस. ओकर बहादुरी ला देख के ब्रिटिश सरकार हा अचंभा में पर गे, आउ वोला "वीर" के पदवी से सम्मानित करीस. ए सम्मान के बाद वोहर वीर नारायण सिंह के नाम से प्रसिध्द होगे. सन 1856 में सोनाखान में घोर अकाल पर गे. जनता मन दाना-दाना बर तरसे ला धर लीस. येती बड़े बड़े बैपारी मन अपन गोदाम में अनाज ला भरे राहय. फेर कोनों किसम के सहायता नइ करत रिहिसे. जनता मन के करलइ ला देख के वीर नारायण सिंह हा एक बैपारी माखन के तीर में सहायता माँगे बर गीस. वोहर बैपारी ले विनती करीस के गरीब किसान मन हा खाय बर तरसत हे. ओमन ला कुछ खाय बर अनाज अउ बोंये बर बीजहा दे देतेस. बैपारी हा सहयोग करे बर साफ मना कर दीस. तब वीर नारायण सिंह हा ओकर गोदाम के तारा ला टोर के सब अनाज ला किसान मन में बाँट दीस. बैपारी माखन हा ए घटना के शिकायत वो समय के डिप्टी कमिश्नर इलियट ले कर दीस. डिप्टी कमिश्नर हा वीर नारायण सिंह के गिरफ्तारी के आदेश निकाल दीस अउ सेना ले के ओकर गाँव सोनाखान चल दीस. आसपास के इलाका अउ गाँव ला सेना मन बहुत खोज बीन

करीस. फेर वीर नारायण सिंह हा नइ मिलीस. तब घुस्सा में आ के सेना मन पूरा गाँव में आगी लगा दीस. सबके घर व्दार हा आगी में जर गे. ये बात ला जानीस त वीर नारायण सिंह हा बहुत दुखी होइस अउ ब्रिटिश शासन के बहुत विरोध करीस. 24 अक्टूबर सन 1856 के संबलपुर में वीर नारायण सिंह ला गिरफ्तार कर लीस. ओकर ऊपर लूटपाट अउ डकैती के मुकदमा दायर करीस. 10 दिसम्बर सन 1857 में रायपुर के एक चौराहा जेला आजकाल जय स्तंभ चौक कहे जाथे उही जगह वीर नारायण सिंह ला फाँसी दे दीस. ओकर बाद ओकर लाश ला तोप के मुँहू में बाँध के उड़ा दीस. ये प्रकार से भारत के एक सच्चा देशभक्त के जीवन लीला समाप्त होगे. शहीद वीर नारायण सिंह ला छत्तीसगढ़ राज्य के पहिली स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के दरजा प्राप्त हे.

मोहन की मेहनत

लेखिका - सुमन पटेल कक्षा नवीं, कनकी व्दारा रामनारायण प्रधान

रामपुर नाम के एक गांव में मोहन नाम का लड़का अपने माता-पिता के साथ रहता था. वह पढ़ाई में बहुत कमजोर था और बुरी आदत के लड़कों के साथ रखकर बिगड़ गया था. उसके माता-पिता उसे बहुत समझाते थे, पर मोहन कहां सुधारने वाला था. जब उसने परीक्षा के समय नकल की तब सुरेश ने मोहन को देख लिया और शिक्षक को बतला दिया. शिक्षक ने मोहन को प्यार से समझाया कि बेटा नकल करके तुम्हें क्या प्राप्त होगा? बस परीक्षा में पास हो जाओगे. तुम्हारी वास्तविक उन्नति नहीं होगी. शिक्षक की बड़े प्यार से कही बात से प्रभावित होकर मोहन ने कहा सर जी मुझे पढ़ना अच्छा नहीं लगता. मैं पढ़ाई में कमजोर हूं. शिक्षक ने कहा बेटा तू एक दिन में बस मुझे एक-दो प्रश्नों के उत्तर याद करके बताना. रोज़ थोड़ा-थोड़ा याद करने से तुम होशियार हो जाओगे. यह बात सुनकर मोहन ने हर रोज़ पढ़ना शुरू कर दिया. देखते ही देखते मोहन का आत्मविश्वास बढ़ गया और वह बहुत होशियार बन गया. फिर वह कक्षा में प्रथम आने लगा. इसके बाद बहुत उसने बहुत आगे तक पढ़ाई की और नौकरी भी हासिल की. वह आज सफल जीवन यापन कर रहा है. वह हर शिक्षक दिवस को अपने प्यारे शिक्षक को फोन करके आशीर्वाद लेना नहीं भूलता है.

डोर पतंग की

लेखक - संतोष कुमार साहू "प्रकृति"

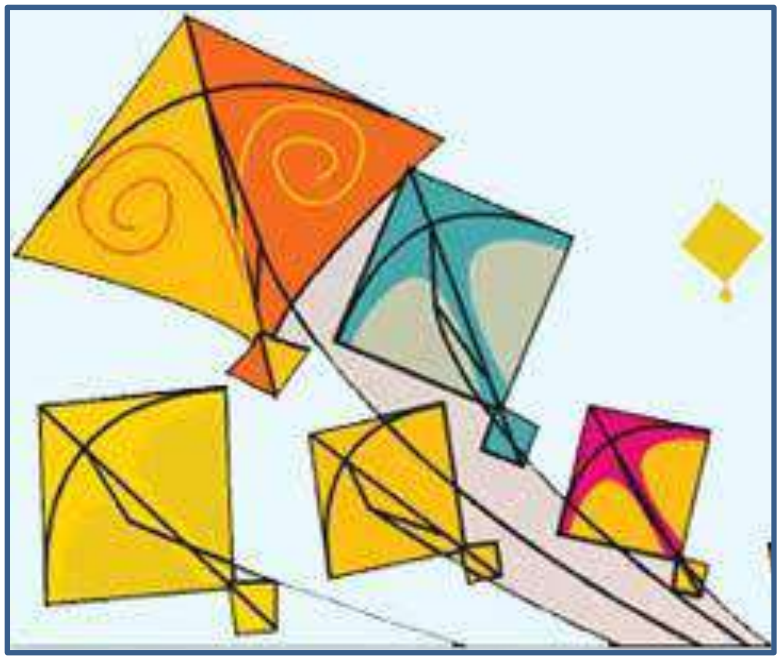

एक दिन की बात है, दो छात्र पतंग बाज़ी कर रहे थे. एक छात्र गरीब परिवार से था और दुसरा अमीर घराने का था. दोनों आनंद, उमंग और उत्साह से पतंग उड़ा रहे थे. गरीब छात्र की पतंग की डोर मजबूत थी परन्तु पतंग कमजोर थी. अमीर छात्र की पतंग की डोर कमज़ोर थी लेकिन पतंग बहुत सुंदर और मजबूत थी. दोनों की पतंग आकाश की बुलंदियों को छूने लगी. उड़ते-उडते अमीर घराने की पतंग को घमंड आ गया और वह खिलखिलाकर हंसने लगी और गरीब घराने की पतंग का मज़ाक उड़ाने लगी. अचानक उसकी डोर कट गई और वह जमीन पर धड़ाम से गिर गयी. गरीब घर की पतंग बिना घमंड के अभी भी उड़ रही थी और आकाश के साथ आंख-मिचौली खेल रही थी. इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है, कि हम कितना ही क्यों न आसमान की ऊंचाईयों पर चढ जायें हमें घमंड नहीं करना चाहिये.

सभी के लिए प्रेरणा अरुणा देशमुख

लेखिका एवं चित्र - नंदा देशमुख

शिक्षा के लिए समर्पित एक नई प्रेरणा बनकर सामने आई हैं दिव्यांग अरुणा देशमुख जो नक्सल प्रभावित ग्राम डोकला जिला राजनांदगांव में शिक्षिका हैं. वे न केवल बच्चों को शिक्षा दे रही हैं बल्कि अतिरिक्त समय में अभिभावकों के तर्ज पर भी पढ़ा रही हैं.

वे 08 - 07 - 1999 से स्कूल में पदस्थ हैं. अब तक उन्होंने एक भी छुट्टी नहीं ली है. शिक्षा की अलख जगाने में अरुणा का एक अलग ही प्रकार का जुनून है. स्कूल की प्रधान पाठिका लता पटवा कहती हैं कि अरुणा देशमुख ने कभी भी अपने दिव्यांग होने का उनको एहसास नहीं दिलाया. वह अपना सभी काम मन लगाकर करती हैं. अरुणा देशमुख ने स्वयं के खर्चे से 10 बच्चों की पूरी शिक्षा की व्यवस्था भी की है.

वे पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को साफ सफाई एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी प्रदान कर रही हैं.

जीता ग्रामीणों का विश्वास - ग्राम डोकला के निवासी शिक्षिका की समर्पण भावना को देखते हुए मजदूरी पर जाने से पहले अपने छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल में शिक्षिका अरुणा देशमुख के पास छोड़कर जाते हैं. वह परिवार के बच्चों की तरह ही उनकी देखभाल करती हैं. स्कूल का भवन जर्जर होने के कारण 2 वर्ष तक उन्होने अपने घर पर ही बच्चों की पढ़ाई लिखाई करवायी. शासन व्दारा नव भवन निर्मित होने पर वहां जाकर स्कूल लगाया.

दिव्यांग शिक्षिका अरुणा देशमुख कहती हैं कि यह सिर्फ उन बच्चों का ही प्यार है जो उन्हें कभी दिव्यांग होने का एहसास नहीं होने देता.

कलेक्टर बनना चाहता है भुक्की दान करने वाला कमल यादव

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - रामचरित सिंह सोलंकी

कक्षा चार में पढ़ने वाले छात्र कमल यादव ने ऐसा किया कि शिविर में उपस्थित अतिथि गण, शिक्षक और पालक सभी अश्रुपूरित और द्रवित हो गए.

दरअसल वनांचल में स्थित शासकीय प्राथमिक शाला खैरड़ोंगरी, संकुल - दुल्लापुर, पंडरिया, जिला - कबीरधाम में तीन दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया था, जिसके समापन समारोह में जिला पंचायत सदस्य, सरपंच, पंच, शाला के प्राचार्य, शिक्षक गण तथा सभी पालक उपस्थित थे. यहां योग शिक्षक श्री रामचरित सिंह सोलंकी के व्दारा नवाचार अपनाते हुए शाला विकास के लिए पालकों से सहयोग के लिए अनुरोध किया गया. तब सबसे पहले कमल यादव (उम्र 9वर्ष) ने अपनी भुक्की (ठेकली) को दान किया, जिसमें पूरे ₹337 थे. जब उसे पूछा गया कि इतना पैसा कहां से आया, तो उसने जवाब दिया कि मैने बिहि और लेदी (ईख) बेचकर सभी

सिक्के इकट्ठा किये थे, जिन्हें मैं अपनी इच्छा से शाला के विकास के लिए देना चाहता हूं. इससे वहां उपस्थित अतिथि गण, शिक्षक, पालक और सभी बच्चे भावुक हो उठे और प्रभावित होकर कमल की सहृदय की सराहना करते हुए सभी ने आर्थिक सहयोग देने की बात कही.

कमल यादव अपने भाई-बहनों में सबसे छोटा है तथा इसके पिता श्री अरुण कुमार यादव जी मध्यमवर्गीय किसान हैं जो बच्चों की पढ़ाई के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं. कमल बड़ा होकर कलेक्टर बनना चाहता है, जिसके लिए वह अपने बड़े भाई से हमेशा यह प्रश्न करता रहता है कि कलेक्टर बनने के लिए मुझे क्या-क्या पढ़ना होगा. इस सत्र में कमल कक्षा चौथी में पढ़ रहा है, लेकिन अपने शिक्षकों की सहायता से कक्षा 4थी की पाठ्यक्रम को पूरा करके अभी से कक्षा 5 वीं के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रहा है. कमल पुस्तक पढ़ने का बहुत शौकीन है. हमेशा कुछ नया करने की सोचता रहता है. ज़ू माईनर पढ़ते समय ज़ेब्रा, जिराफ, कंगारू के बारे में प्रश्न पूछता हुआ, चिड़िया घर में इनकी उपलब्धता के बारे में पूछने लगा तो इसके शिक्षक व्दारा वन मंत्री व मुख्य मंत्री को जू में इन जीवों को लाने के लिये बच्चों से पत्र लिखवाया गया.

समझाओ न शर्मा ऑन्टी को माँ, कि बिटिया को भी चहचहाने दें

लेखक - निशांत शर्मा

माँ आपने 9 माह तक मुझे अपनी कोख में बहुत संभाल कर रखा. देखो अब मैं आ गई इस दुनिया में रोते-रोते. आपको, पिताजी को और बाकी रिश्तेदारों को लगता था कि लड़का होगा पर मैं तो नन्ही चिड़िया बन कर आ ही गयी आपके घर पर चहचहाने को. दुखी मत होना मम्मी. आपको और पिताजी को कभी भी शिकायत का कोई मौका नहीं दूंगी. पढ़ाई में अच्छे नंबर लाऊंगी. बड़े हो जाने के बाद आपके काम में आपका हाथ भी बटाउंगी. पापा की देखभाल भी खूब करूंगी. समय पर आपको दवाई दूँगी. हँस दो न मम्मी अब. भले ही मैं लड़का न सही पर आपको कभी लड़के की कमी महसूस नहीं होने दूँगी.

पता है मम्मी बाजू वाली शर्मा ऑन्टी ने तो लड़की का पता चलते ही कोख में ही उसे मार दिया था. शायद उनको लक्ष्मी नहीं कुबेर की चाह थी. पर मम्मी लड़की भी तो भाग्य लाती है न. वो भी तो जीने का हक रखती है.

समझाओ न शर्मा ऑन्टी को कि बिटिया भी तो लाडली होती है. वो भी तो माँ का ही अंश है. आप भी तो सबसे पहले एक बेटी हो. बिटिया को चहचहाने दो माँ. आँगन को कलकल करने दो. जो उड़ गई ये नन्ही चिड़िया तो घर को सूना कर देगी. फिर बहुत याद आएगी इसकी. तब अकेले में फूट-फूटकर रोना मत माँ..

नवाचार - कहानी के व्दारा बच्चों में सृजनात्मक्ता का विकास

नवाचारी शिक्षक - संतोष कौशिक

कक्षा आठवीं में बच्चों को 10 शब्द दिये गये - गांव, स्कूल, मंदिर, नदी, जंगल, पौधा, बच्चे, घर, बगीचा और शिक्षक. इन शब्दों का प्रयोग करते हुए कहानी लिखने को कहा गया. बच्चों ने बहुत सुंदर कहानियां लिखी हैं. सबसे अच्छी पांच कहानियां नीचे प्रकाशित की जा रही हैं -

बच्चे होते अच्छे

लेखिका - कुमारी संतोषी

एक गांव था. उस गांव के स्कूल में सोनू और मोनू पढ़ते थे. सोनू पढ़ाई में अधिक रुचि रखता इसलिए शिक्षक सोनू की ओर ज्यादा ध्यान देते और मोनू खेलकूद में अधिक रुचि रखता इसलिए शिक्षक मोनू की ओर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे. कुछ दिनों बाद परीक्षा होती है जिसमें सोनू पास हो जाता है और मोनू फेल हो जाता है.

जब मोनू दूसरे दिन स्कूल जाता है तो शिक्षक उसे बहुत डांटते हैं व अपने माता-पिता को बुलाने के लिए कहते हैं.

मोनू के माता-पिता आकर शिक्षक से मिलते हैं. शिक्षक मोनू के फेल होने की बात बताते हैं तो उसके माता-पिता भी मोनू को डांटने लग जाते हैं. यह बात मोनू के कानों में गूंजते रही. जब रात हुई तो मोनू घर से निकल कर जंगल की ओर चला जाता है. जंगल में मोनू को उदास देखकर पेड़ पौधे नदी तालाब सभी उदास हो जाते हैं. पास में मंदिर तथा बगीचा था. उसी मंदिर में वृध्द महिला रहती थी. उसने मोनू को उदास देख कर पूछा - बेटा तुम क्यों उदास हो. मोनू अपनी बीती हुई सभी घटनाओं को विस्तार से बताता है. वृध्द महिला समझाती है - तुम पढ़ाई करो. मेहनत करोगे तो एक ना एक दिन ज़रूर तुम आगे बढ़ोगे. मोनू वृध्द महिला को धन्यवाद देने के लिए पलटा तो वहां पर वह वृध्द महिला नहीं थी. मोनू फिर अपने घर चला गया. वह नहीं जानता कि वह मां सरस्वती थीं. दूसरे दिन स्कूल आकर वृध्द महिला शिक्षक से बोलतीं हैं कि - सर जी जितना आप सोनू की ओर ध्यान देते हो उतना ही ध्यान मोनू की ओर दिया करें. मोनू कमजोर है इस कारण आप उसकी ओर ध्यान नहीं देते. आप उसकी ओर भी ध्यान दोगे तो वह बालक कैसे पास नहीं होगा. वह पढ़ाई में बहुत अच्छा नहीं है तो क्या हुआ खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य कार्यों में तो अच्छा है. यदि सोनू की तरह ध्यान दोगे तो वह बालक निश्चित ही पढ़ाई में आगे बढ़ेगा. यह कह कर वृध्द महिला स्कूल से चली जाती हैं.

तब शिक्षक को पश्चाताप होता है कि सच में सभी बच्चों में एक ना एक गुण रहता है. कोई पढ़ने में अच्छा है, तो कोई बालक चित्रकारी में. इस तरह शिक्षक मोनू को मन लगाकर पढ़ाते हैं. मोनू परीक्षा में प्रथम स्थान में पास हो जाता है. शिक्षक उसके माता-पिता को बुलाकर समझाते हैं कि आप दोनों बच्चों के ऊपर ध्यान दिया

करें. मोनू परीक्षा में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की है मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपके दोनों बच्चों को हमेशा सफलता मिले.

शिक्षा - सभी बच्चों में कुछ ना कुछ गुण होता है. शिक्षक को पहचान कर उसके गुणों को आगे बढ़ाना चाहिए.

कर्मों का फल

लेखक - कैलाश कुमार

बहुत पुरानी बात है. एक गांव था. उस गांव में रामलाल अपने परिवार के साथ रहते थे. रामलाल की पत्नी की मृत्यु होने के कारण उसने दूसरी शादी की. उसकी पत्नी का नाम लता देवी था. उनके एक लड़का और एक लड़की थी. लड़की का नाम सरला था. सरला बड़ी हो गई थी. सरला लता देवी की सौतेली बेटी थी इसलिए लता देवी सरला से नफरत करती थी. लड़के का नाम नरेश था. नरेश उसका लाड़ला बेटा था. नरेश छोटा था. वह स्कूल जाता था. शिक्षक से अच्छी-अच्छी बातें सीखता था. मगर घर में कुछ काम नहीं करता था. घर का सब काम सरला करती थी.

एक दिन खाना पकाने के लिए सूखी लकड़ी न होने के कारण लता देवी ने सरला को जंगल में जाने को कहा. वह अकेले जंगल चली गई. जंगल में उसे एक मंदिर के पास हिरण दिखा. हिरण शिकारी के जाल में फंसा था. सरला ने पास जाकर जाल काट दिया. हिरण ने कहा शुक्रिया, भगवान तुम्हारा भला करे. सरला आगे बढ़ी. आगे उसे एक बगीचा मिला. वह बगीचे के अंदर गई. उसमें छोटे बड़े पेड़ पौधे थे. उसमें से उसे एक सूखा पेड़ दिखा. पेड़ ने कहा बेटी क्या तुम मुझे पानी दे सकती हो? सरला बोली- ज़रूर. फिर वह नदी में जाकर पानी लेकर उस पेड़ में डाली. पेड़ हरा-भरा हो गया. पेड़ ने कहा - शुक्रिया, भगवान तुम्हारा भला करें. सरला आगे बढ़ी. फिर उसे एक झोपड़ी दिखी. उस झोपड़ी के अंदर गयी. वहां उसने देखा कि एक बूढ़े बाबा रहते हैं. सरला बोली - बाबा आप इस जंगल में अकेले रहते हो. बाबा कहते हैं - मेरे बच्चे मुझे संभाल नहीं सकते. सब अपने परिवार में व्यस्त हैं. सरला बोली मैं आपकी सेवा करूंगी .फिर सरला उनकी सेवा करने लग गई. कुछ दिनों में उसे अपने परिवार वालों की याद आई. वह बाबा से बोली कि अब मैं अपने घर जाना चाहती हूं. बाबा ने कहा - ठीक है बेटी. फिर दोनों एक नदी के पास गए. बाबा ने नदी से पानी निकाला और एक बर्तन में डाला. पानी सोने का हो गया. सरला सोना को लेकर घर चली गई.

घर में सरला को देखकर उसका भाई कहता है - मां देखो सरला आ गई है. उसके हाथ में सोना है. सोने को देखकर उसकी मां कहती है - यह तो असली सोना है. कहां से लाई हो? सरला ने कहा - जंगल में एक बाबा ने मुझे दिया है. लता देवी कहती है - मैं भी जाती हूं उस बाबा के पास. मुझे रास्ता बताओ. सरला ने उसे जाने का रास्ता बताया.

लता देवी जंगल की ओर चली गई. रास्ते में उसे एक हिरण जाल में फंसा मिला. हिरण ने लता देवी को अपने पास बुलाकर कहा यह कि यह जाल काट दो. लता देवी बोलती है - मैं क्यों तेरी मदद करूं. मैं तो सोना लेने आई हूं. वह आगे बढ़ी तो सूखा पेड़ मिला. लता देवी से कहता मुझे थोड़ा पानी दे दो मैं हरा भरा हो जाऊंगा. लता देवी उसे भी इंकार कर देती है. फिर उसे एक झोपड़ी मिली. झोपड़ी के अंदर गई और बाबा से बोली - बाबा मुझे सोना दो. बाबा ने कहा - पहले तुम्हें मेरी सेवा करनी होगी. लता देवी बोलती है - मैं क्यों तेरी सेवा करूं. तुम मेरे कोई रिश्तेदार लगते हो क्या? ऐसा कह कर लता देवी नदी के पास चली जाती है. नदी में से पानी निकाली तो पत्थर निकला. लता देवी परेशान हो जाती है. बाबा उसके पास आकर कहता है - जिसका मन पत्थर जैसा हो उसे सिर्फ पत्थर ही मिलता है.

शिक्षा - हमें निस्वार्थ लोगों की सेवा करनी चाहिए. जो भी कार्य हम करते हैं उसका फल एक ना एक दिन अवश्य मिलता है.

<u>बुढ़िया की मदद</u>

लेखिका - कुमारी संगीता

एक गांव था. उस गांव में बहुत सारे बच्चे थे. सभी बच्चे स्कूल जाते थे. अपने शिक्षक से अच्छा-अच्छा ज्ञान लेकर आते थे. एक दिन सभी बच्चे घूमते हुए जंगल

में पहुंच गए. वहां देखते हैं कि एक बुढ़िया रहती है और बेचारी बुढ़िया के पास कुछ खाने-पीने का नहीं था. तो सभी बच्चे बोलते हैं - आपके पास तो खाने-पीने की कुछ चीज नहीं है. आप यहां मत रहो. चलो हमारे साथ में हमारे घर चलो. फिर बुढ़िया बोलती है कि - नहीं बेटा मैं तुम्हारे घर नहीं जा सकती हूं क्योंकि मुझे तुम्हारे माता-पिता देखेंगे तो डायन, चुड़ैल बोलेंगे. फिर एक बच्चा बोला आप हमारे घर नहीं जा सकती हो तो क्या हुआ आप हमारे गांव के पास एक मंदिर में रह सकती हो. फिर बुढ़िया बोली - अरे बेटा मैं वहां रहूंगी तो मुझे कुछ काम मिल सकता है क्या? दूसरा बच्चा बोला - दादी जी आपको ज्यादा काम तो नहीं करना होगा. हमारे मंदिर के पास छोटा सा बगीचा है. उस बगीचे में छोटे-छोटे पेड़ पौधे हैं. तुम्हें नदी से पानी लाकर पेड़ पौधों में डालना होगा. इतना ही काम है.

दादी जी ज्यादा काम करने में असमर्थता जताती हैं. उसे देखकर तीसरे बच्चे ने कहा - दादी जी नदी तो मंदिर के पास ही है. आप क्यों फिक्र करती हो. हम सब बच्चे आपसे रोज़ मिलने आएंगे. हम पेड़ पौधे में पानी डालने के लिए आपकी मदद भी करेंगे. वह बुढ़िया उन बच्चों के साथ मंदिर आ जाती है. सभी बच्चे उस बुढ़िया को मंदिर में छोड़कर अपने-अपने घर चले जाते हैं. बुढ़िया मंदिर में मन लगाकर काम करती है. बच्चे आकर उसका सहयोग करते थे. बेचारी बुढ़िया को बच्चों के माध्यम से काम मिल जाता है. बुढ़िया बच्चों को आशीर्वाद देती हैं. अब वह बुढ़िया मंदिर में खुशी-खुशी अपना जीवन यापन करती है.

शिक्षा - इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें असहाय एवं दीन दुखियों की सेवा करनी चाहिए.

मां बाप को भूलना नहीं

लेखिका - कुमारी टिकेश्वरी

एक राज्य में एक राजा और उसकी पत्नी रहते थे. उनकी कोई संतान नहीं थी. उन्होंने किसी बच्चे को गोद लेने की सोची. राजा बच्चे की खोज में लग गया. राजा एक आदमी के घर पहुंचा. उसके तीन बेटे थे. सबसे बड़े बेटे का नाम रिंकू, मंझले बेटे का नाम टिंकू और सबसे छोटे बेटे का नाम पिंकू था. राजा ने छोटे बेटे को अपना पुत्र बनाना चाहा. फिर उसने पिंकू के माता-पिता से बात की. पिंकू के पिता ने कहा - ठीक है मैं आपको अपना बेटा दूंगा लेकिन मैं उसे सप्ताह में एक बार देखने जरूर आऊंगा. राजा ने कहा - ठीक है, परंतु पिंकू को नहीं बताओगे कि तुम उसके पिता हो. उसने वचन दिया कि वह पिंकू को नहीं बताएगा. दूसरे दिन राजा पिंकू को ले जाता है. राजा ने पिंकू को खूब अच्छी परवरिश की. कुछ दिनों बाद राजा ने अपनी पत्नी से कहा - अब पिंकू बड़ा हो गया है. क्यों न हम उसके लिए

विद्यालय बनवाएं. रानी ने कहा - तुम सही कहते हो. पिंकू को शिक्षा देने के लिए हमें उन्हें स्कूल भेजना चाहिए. राजा ने नदी के किनारे विद्यालय बनवाया. उस नदी के किनारे एक बहुत सुंदर मंदिर था. राजा ने सोचा - इस विद्यालय में तो पानी की समस्या नहीं है लेकिन यहाँ एक सुंदर बगीचा बन जाए तो अच्छा होगा. राजा ने बगीचे के लिए उसमें विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगवाए. स्कूल के समय पर बच्चे और शिक्षक पेड़ पौधे की सेवा करते थे. बच्चे स्कूल की छुट्टी होने के बाद भी पिंकू के साथ बगीचे में खेलने आते थे. पिंकू पढ़-लिख कर बड़ा व समझदार हो गया था.

वह एक दिन खेलते हुए जंगल की ओर शिकार करने गया. वहां राजकुमार पिंकू को एक झोपड़ी दिखाई दी, जो बहुत पुरानी हो गयी थी. राजकुमार झोपड़ी के अंदर गया. उसने देखा कि एक असहाय बूढ़ा व्यक्ति बिस्तर पर लेटा हुआ अपने बेटे को याद कर रहा था. वह बार-बार पिंकू-पिंकू कह कर बुला रहा था. पिंकू पूछा कि वह उसका नाम क्यों ले रहा है? वह बूढ़ा व्यक्ति समझ गया कि यह उसका बेटा पिंकू ही है. लेकिन पिंकू को कुछ याद नहीं था. उस बूढ़े व्यक्ति ने पिंकू को अपने बिस्तर के पास बुलाकर सिराने बैठने को कहा. वह बूढ़ा व्यक्ति पिंकू को पिछली घटना के बारे में जानकारी दिया. पिंकू समझ गया कि यही मेरे पिताजी हैं. पिंकू अपने पिता जी को असहाय व बीमार देखकर उसे गांव ले गया. गांव में डॉक्टर बुलाकर उसका इलाज कराया. वह व्यक्ति स्वस्थ हो गया. राजा ने उसे अपने घर में रहने के लिए जगह दे दी. वे सब खुशी-खुशी रहने लगे.

शिक्षा - हमें इस कहानी से सीख मिलती है कि अपने मां बाप को कभी भूलना नहीं चाहिए.

गुरु की परीक्षा

लेखक - शेखर पटेल

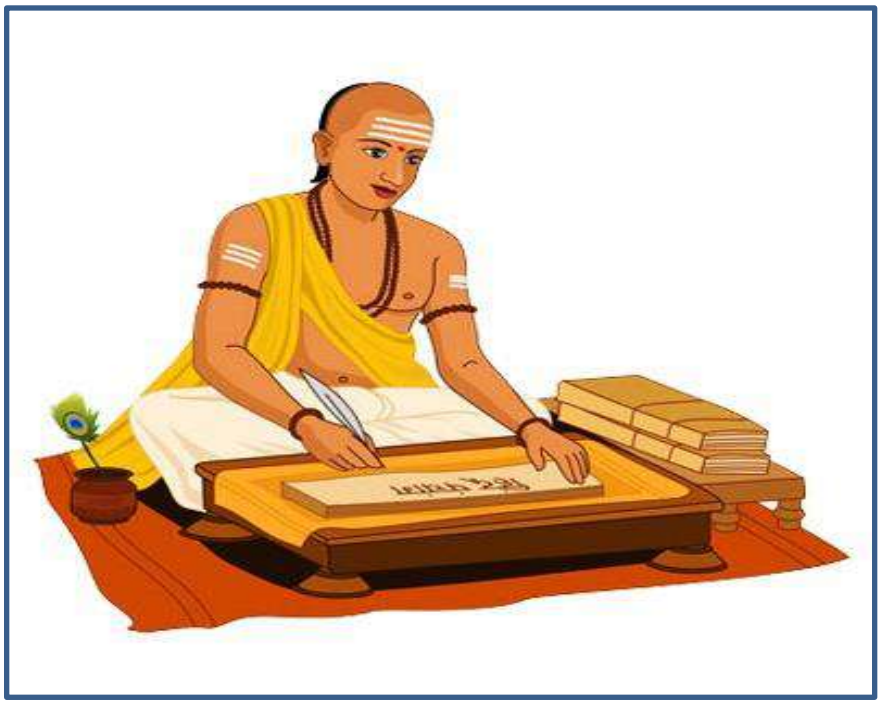

एक गांव में एक स्कूल था. उसी स्कूल में बहुत सारे बच्चे पढ़ने आते थे. उन्हीं मे से थे मोहन और सोहन. उन दोनों की परीक्षा पूरी हो चुकी थी. जब मोहन और सोहन शिक्षा पूरी करके अपने घर जा रहे थे तो उन्हें शिक्षक ने पास बुलाया और कहा - बच्चों आज तुम अपने घर जा रहे हो, लेकिन तुम्हें अपने घर जाने से पहले एक और परीक्षा देनी पड़ेगी. इस परीक्षा में पास हो गए तो तुम अपने घर जा सकते हो.

मोहन ने पूछा कैसी परीक्षा गुरुजी? गुरुजी ने कहा- तुम दोनों को मेरा एक छोटा सा कार्य करना है. मोहन ने कहा - हम अवश्य ही आपका दिया कार्य पूरा करेंगे. गुरूजी ने कहा - बच्चों मैं तुम दोनों को एक-एक कबूतर देता हूं. तुम्हें ऐसी जगह ले जाकर उसे मारना है जहां तुम्हें कोई देख ना रहा हो. मोहन और सोहन दोनों कबूतर को लेकर चले जाते हैं. मोहन अपने कबूतर को लेकर मंदिर के पास एक सूनसान गुफा

में ले जाकर मार डालता है और तुरंत अपने स्कूल आता है. गुरुजी से कहता है कि मैंने उस कबूतर को मार दिया है. क्या मैं इस परीक्षा में सफल हो गया हूं? गुरुजी ने मोहन से कहा मैंने तुम्हें और सोहन दोनो को यह कार्य दिया है. परीक्षा के परिणाम के लिए तुम्हे सोहन का इंतजार करना पड़ेगा. शाम हो गयी. गुरुजी को सोहन का चिंता होने लगी थी. तभी दूर से सोहन आते हुए दिखा. सोहन गुरु जी को प्रणाम करता है. गुरुजी सोहन को आशीर्वाद देते हुए पूछते हैं कि तुम्हें इतनी देर कैसे हो गई और तुम्हारे हाथ में यह कबूतर कैसे जिंदा है? सोहन ने कहा - गुरुजी यह कहानी बहुत लंबी है. बस यह समझ लीजिए कि मैं इस परीक्षा में सफल नहीं हुआ हूं. मुझे क्षमा करें. यह सुनकर गुरुजी ने कहा - रुको सोहन तुम जब तक हमें पूरी बात नहीं बताओगे तुम्हें हम स्कूल के अंदर आने नहीं देंगे. बताओ तुम्हारे साथ क्या हुआ था. सोहन ने कहा - गुरूजी आपने कहा था कि उसको ऐसी जगह पर मारना जहां पर तुम्हें कोई देख ना रहा हो. मैं इसे मारने के लिए जंगल ले गया. मगर वहां मौजूद जानवर देख रहे थे. फिर मैं इसे बगीचे में ले गया. वहां तो कोई नहीं था मगर पेड़-पौधे मुझे देख देख रहे थे. इसके बाद मैं इसे नदी के पास ले गया. वहां मुझे मछली और नदी देख रही थीं. इसके बाद मैं इसे एक गुफा में ले गया. वहां मुझे अंधेरा देख रहा था. सबसे बड़ी बात तो यह कि मैं इसे खुद देख रहा था.

सोहन की बात सुनकर गुरूजी मुस्कुराए और बोले - सोहन तुमने सबसे अच्छी शिक्षा प्राप्त की है. जो मैं तुम्हें समझाना चाहता था वह तुम समझ गए हो. तुमने इस कबूतर को इसलिए नहीं मारा क्योंकि सब देख रहे थे. यही बात एकांत में भी हमें गलत काम करने से रोकती है. अगर हम गलत काम करने से पहले सोच लें कि हमें कोई देख रहा है तो हम गलत काम नहीं करेंगे. गुरुजी की बात सुनकर मोहन

को लगा कि मेरी शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई है और वह स्कूल में ही रुक गया और सोहन गुरु जी को प्रणाम करके घर चला गया.

शिक्षा - कोई भी कार्य सोच समझकर और सत्य के मार्ग पर चलते हुए करना चाहिए.

नंदा मैडम की कक्षा भाग 5

लेखक - सुधीर श्रीवास्तव

(पिछले अंक में आपने पढ़ा कि नंदा, सुधा, हरप्रीत और एहसान संख्याओं पर बातचीत कर रहे थे. इस बातचीत में नंदा उनसे पूछती है कि आप गुड़, शहद और बताशे का स्वाद एक दूसरे को कैसे समझाएंगे? अब आगे.)

आज चारों जब स्कूल आए तो माहौल कुछ बदला-बदला सा लग रहा था. एक दूसरे से नमस्कार की औपचारिकता हुई. पर कुछ बात थी जो और दिनों से अलग थी. नंदा इसे महसूस कर रही थी, शायद बाकी सदस्य भी.

नंदा इस चुप्पी को मन ही मन समझने की कोशिश कर रही थी. उसे सबके दिमाग में चल रहे संघर्ष का आभास था. मिठास को लेकर खुद को हुई अनुभूतियां दूसरों को कैसे बताई जाएं, यह सवाल लगता तो छोटा है, पर है बहुत मुश्किल. किसी भी चीज के लिए जो छवि अपने दिमाग में बनी है उसे वैसे का वैसा दूसरे के दिमाग में बना पाना सहज नहीं है. नंदा यह समझ रही थी कि यही सवाल सबके दिमाग को मथ रहा है. उसके दिमाग में भी यह द्वंद चल रहा था कि वह अपनी बात कैसे अपने साथियों के सामने रखे. वह चाहती थी कि सभी इस विचार को समझें और उसकी गंभीरता को महसूस भी करें.

रोज की तरह प्रार्थना के बाद, जब सभी इकट्ठे हुए तो एहसान ने इस चुप्पी को तोड़ते हुए कहा, अरे भाई! मान लिया कि किसी को सवाल का जवाब नहीं मिला तो इसका मतलब यह तो नहीं कि आपस में बात ही ना करें.

उनकी बात के जवाब में सुधा मुस्कुरा उठी, फिर उसने कहा, सर, जानबूझकर किसी ने यह चुप्पी ओढ़ी थोड़ी है. बस बात यह है कि कल का यह सवाल दिमाग में चिपक सा गया है. गुड़ और शहद मीठे तो हैं पर वह मिठास कैसी है, दोनों में फर्क क्या है? मैं तो कल से अभी तक इस प्रश्न से बाहर नहीं निकल पाई हूं.

एहसान ने कहा, तुम बहुत सही कह रही हो सुधा. जब भी किसी सवाल का जवाब सूझ नहीं रहा होता है तो हम ऐसे ही बेचैन होते हैं. अलग-अलग तरीके ढूंढते हैं, आजमाते हैं और तब तक चैन नहीं लेते, जब तक किसी अंजाम तक पहुंच नहीं जाते. ये बेचैनियां बड़ी खूबसूरत दोस्त होती हैं. सही जगह पर पहुंचाए बिना छोड़ती नहीं हैं.

नंदा एहसान की आखिरी बात पर हंस पड़ी. कहा, खूबसूरत दोस्त, बड़ी अच्छी उपमा दी सर आपने. वैसे मैं आपके विचारों से सहमत हूं. मुझे भी लगता है यह बेचैनी, यह छटपटाहट सीखने या कुछ पाने के लिए बहुत जरूरी है.

हरप्रीत जो अभी तक चुप थी, बोल पड़ी, मुझे अब समझ में आया कि क्यों अपनी क्लास में नंदा बच्चों के सामने सवाल पर सवाल छोड़ती जाती है. बहुत कम बार ऐसा होता है कि वह खुद से बता दे. क्यों नंदा, है ना ऐसा ही? हरप्रीत के स्वर में झूठ-मूठ की शिकायत का भाव था.

हरप्रीत के सवाल पर नंदा मुस्कुराई और बड़े प्यार से बोली, नहीं मेरी प्यारी प्रीत, कभी-कभी जब गाड़ी बिल्कुल भी आगे नहीं बढ़ती तो धक्का लगा देती हूं. पर हमेशा इसकी जरूरत नहीं पड़ती. सवालों के जवाब हमारे भीतर ही कहीं छुपे पड़े होते हैं, थोड़ा कुरेदना पड़ता है और इससे ही काम बन जाता है.

इस बातचीत को बीच में रोकते हुए एहसान ने कहा, अब हम सब अपनी-अपनी कक्षाओं में चलें. शाम को बच्चों की छुट्टी होने के बाद थोड़ी देर रुकेंगे. और हां, बताशे की मिठास को समझने की कोशिश भी करेंगे.

उनकी इस बात पर सभी को हंसी आ गई. वातावरण हल्का हो गया था. सभी अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए. शाम को छुट्टी की घंटी बजी. थोड़ी देर में सारे बच्चे चले गए. चारों सदस्य बरामदे में आकर बैठ गए.

हरप्रीत थोड़ी बेचैन लग रही थी. उसने कहा, नंदा, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं ढूंढ पाई. अब मैं इस बारे में और नहीं सोच सकती. प्लीज, अब बता ही दो तुम क्या समझाना चाहती हो.

नंदा ने हरप्रीत की ओर बहुत शांत भाव से देखा, कहा कुछ नहीं. परंतु उसकी आंखें कह रही थी, अभी थकना नहीं है. फिर उसने अपना चेहरा सुधा की तरफ घुमाया.

सुधा ने कहा, नंदा, मैं भी किसी परिणाम तक नहीं पहुंच पायी.

तब नंदा ने एक उम्मीद के साथ एहसान को देखा, शायद उनकी ओर से कोई बात आए. पर उसे वहां भी कोई प्रतिक्रिया दिखाई नहीं पड़ी. उसने एक गहरी सांस ली फिर धीरे से कहना शुरू किया,

मैं अपनी बात दूसरी तरह से रखती हूं. मान लीजिए हमारे पास इत्र बेचने वाला एक व्यक्ति आता है. वह हमें अलग अलग इत्रों से भिगा-भिगा कर रुई के फाहे देता है. हम बारी-बारी से उनकी गंध लेते हैं. अब वह हमसे पूछता है हमें कौन सी खुशबू अच्छी लगी. सोचिए आप उसे क्या कहेंगे? नंदा ने नया सवाल पूछा.

हरप्रीत ने खुश होकर तपाक से कहा, बहुत आसान है , मैं उस फाहे को उठाकर कहूंगी, ये वाली.

हरप्रीत ने यह बात इतनी मासूमियत से कही कि सभी को हंसी आ गई. नंदा ने अपनी हंसी रोकते हुए कहा, अच्छा ठीक है प्रीत, मान लो यह इत्र बेचने वाला तुम्हें एक महीने बाद फिर मिलता है और तुम वही इत्र लेना चाहती हो तो अब क्या कहोगी?

ओह नंदा, तुमने तो मुझे फंसा दिया. हरप्रीत ने कहा.

नहीं प्रीत, मैं सीरियस हूं.

हरप्रीत ने कुछ सोचते हुए कहा, मुझे लगता है, मुझे उस इत्र वाले से उस इत्र का नाम जान लेना होगा, जिसकी खुशबू मुझे पसंद आई.

बहुत बढ़िया प्रीत. नंदा ने कहा.

एहसान सर, आप अपनी पसंद वाली खुशबू कैसे चुनेंगे?

मैं कुछ खुशबुओं को उनके फूलों के नाम से पहचानता हूं. यदि कोई पहचानी हुई खुशबू मिली तो उसे उसके नाम से मांग लूंगा और कोई नई खुशबू मिली तो इत्र वाले से उसका नाम पूछ लूंगा.

नंदा, मुझे भी अब यह बात समझ में आ रही है जो खुशबू हमें अच्छी लगी उसे उसके नाम से हमें पहचानना होगा. अब चूंकि इत्र वाला सभी खुशबूओं को उसके नाम से पहचानता ही है तो ऐसी स्थिति में यदि कोई कहे, मुझे अमुक खुशबू चाहिए तो नाम बोलते ही उसके दिमाग में उसी खुशबू की स्मृति आएगी. सुधा ने अपने विचार रखे.

वाह सुधा! तुमने बहुत अच्छी बात कही. अब एक कल्पना और करते हैं. मान लें हम सब बहुत सारी खुशबूओं को पहचानने लगे हैं. अब एक खास खुशबू है, जो हम चारों को पसंद है तो जब मैं कहूं कि अमुक खुशबू मंगाई जाए तो ऐसा कहते ही उस खुशबू की एक छवि हम सबके दिमाग में बनेगी. नंदा ने कहा.

नंदा, खुशबुओं की छवि दिमाग में बनने का मतलब समझ में नहीं आया मुझे. एहसान ने अपनी दुविधा रखी.

नंदा एक पल चुप रही. फिर उसने कहा, हम इसे इस तरह समझें, मान लें आप बारी-बारी से एक-एक खुशबू को सूंघ रहे हैं. आपकी नाक में जैसे ही यह खुशबू पड़ी, आप बोल पड़ेंगे, हां, यही है वो खुशबू. आप उसे पहचान लेंगे और उसका नाम तुरंत बता देंगे.

बिल्कुल ठीक. एहसान ने कहा.

तो अब समझिए कि किसी खुशबू या कुछ खुशबूओं को बताने के लिए हमें पहले भी उनका अनुभव, उनकी पहचान उनके एक नाम के साथ करनी होती है. तब फिर उनकी अनुपस्थिति में भी उनके बारे में बात की जा सकती है. नंदा ने कहा.

थोड़ी देर तक सभी चुपचाप इसे समझने की कोशिश करते रहे. एकाएक हरप्रीत ने कहा, क्या यही बात मिठास के साथ भी लागू होगी, यानी यदि हम सभी जान रहे हैं कि यह गुड़ की मिठास है, यह शहद की मिठास है और इसी तरह किसी दूसरी मीठी चीज की. तब केवल नाम लेकर ही सामने वाले को उसकी अनुभूति कराई जा सकती है.

वाह प्रीत! बहुत बढ़िया. यहां तुमने मिठास की भिन्नता को उन नामों से जोड़ लिया जिनसे उनकी छवि या इमेज दिमाग में सुरक्षित रखी जा सकती है. लेकिन यहां भी खुशबू वाले मामले की

तरह जरूरी है कि बताने वाले और सुनने वाले दोनों को वे स्वाद पहले से ही मालूम हों. यानी यदि किसी ऐसे व्यक्ति को गुड़ या शहद या किसी दूसरी चीज़ के स्वाद के बारे में बताना हो जो उसे नहीं जानता तो पहले हमें उसे इन चीज़ों का स्वाद चखाना होगा. और तभी हम उससे गुड़, शहद या किसी और दूसरी चीज़ के स्वाद के बारे में बात कर पाएंगे.

सुधा बोल पड़ी, बात थोड़ी पेचीदा है लेकिन समझ में आ रही है.

नंदा ने अपनी बात जारी रखी. उसने कहा, हां हमने स्वाद और खुशबू की तरह अपनी सारी अनुभूतियों को अलग-अलग नाम दे रखे हैं. जैसे-जैसे नयी अनुभूतियों से गुजरते हैं उन्हें उनके नाम के साथ अपनी स्मृतियों में जोड़ते और सहेजते चले जाते हैं. जब कभी दोबारा उनसे आमना- सामना होता है तो तुरंत उन्हें उनके नाम और गुण से याद कर लेते हैं.

ये बातें धीरे-धीरे साफ होती जा रही थीं. एहसान ने कहा, नंदा तुम्हारी बात समझ में आ रही है लेकिन यह समझ में नहीं आ रहा है कि इन सभी बातों का संख्याओं से क्या संबंध है?

नंदा कुछ गंभीर हो गई. उसने कहा, इस लंबी चर्चा के पीछे मेरा आग्रह है कि हम चीजों को कुछ ज्यादा गंभीरता से देखें, उस पर सोचें. जिन्हें हम बहुत हल्का या साधारण समझते हैं, उसमें थोड़ा गहरे पैठने की कोशिश करें तो उनके नए अर्थ खुलते जाते हैं, इस बात को महसूस करें. अपनी बातचीत में हमने स्वाद और खुशबू के उदाहरणों के जरिए यह समझा कि किसी अनुभूति की व्याख्या शब्दों के माध्यम से करके समझाना कितना कठिन है. इससे आसान है कि जिन्हें हम समझाना चाहते हैं उन्हें भी उन अनुभूतियों से गुजरने दें.

संख्याबोध भी अनुभूतियों की तरह की चीज है. जिस तरह स्वाद और खुशबू को समझने और समझाने के लिए समझने और समझाने वाले को उसे महसूस करना जरूरी है ठीक उसी तरह से संख्याओं को भी समझने और समझाने के लिए इन्हें महसूस करना जरूरी है. इन्हें समझने के लिए भी उनके एहसास से गुजरना होगा. जैसे हम उस संख्या को समझना चाहें जिसका नाम हमने पांच रखा हुआ है तो हमें अलग -अलग चीजों के ऐसे बहुत से समूह रखने होंगे जो पांच होने के गुण को प्रदर्शित करते हों. यहां यह चीजें रंग, रूप, आकार या गुण में एक दूसरे से अलग होंगी लेकिन उनमें एक बात होगी जो कॉमन होगी यानी सब में एक जैसी और वह होगी संख्या पांच को प्रदर्शित करने की विशेषता.

अब इन्हें दिखाते हुए किसी बच्ची से कहें, देखो बेटा, ये पांच फूल हैं, ये पांच कंकड़ हैं, ये पांच बीज हैं और ये पांच किताबें हैं. क्या तुम पांच उंगलियां दिखा सकती हो?

हालांकि इसके पहले उस बच्ची के साथ एक-एक संगतता, क्रम से गिनना, तुलना करना, एक जैसी चीजों को छांटना, मिलान करना जैसे गुणों को विकसित करने का काम भी करना होगा. यह भी हो सकता है कि शुरु के दो चार प्रयासों में बच्ची वैसा ना कर पाए जैसा हम चाहते हैं. हमें प्रतीक्षा करनी होगी और नए प्रयास करने होंगे. एक समय आएगा जब बच्ची उस अदृश्य पांच को समझ लेगी. फिर वह ना केवल पांच चीजें गिनने लगेगी बल्कि अन्य संख्याओं से उसके संबंधों को भी समझने लगेगी. तब पांच केवल एक नाम या आकृति नहीं होगी. बच्ची उसे उसके अर्थ के साथ पहचानने भी लगेगी.'

बहुत अच्छा नंदा, मैंने तो कभी इस तरह सोचा ही नहीं था. हरप्रीत ने कहा.

तुम्हारी बातें मेरी समझ में आ रही हैं नंदा, लेकिन मुझे लगता है इसे और अच्छी तरह समझने में मुझे तुम्हारी और मदद चाहिए होगी. सुधा ने अपनी बात रखी.

एहसान चुप थे. नंदा ने उनसे पूछा, सर, आप क्या सोच रहे हैं?

एहसान ने गहरी सांस ली फिर धीरे से कहा, तुम्हारी बातें अपने अंदर बिठाने की कोशिश कर रहा हूं. पर एक सवाल मेरे अंदर उठ रहा है नंदा, कि अभी तुमने पांच को लिखने की बात नहीं की. वह कब किया जाए और क्या वह संख्या नहीं है?

सर, अभी हमने बच्ची के सामने अलग-अलग वस्तुओं को रखने का उदाहरण दिया था. अब इनके लिए जब हम पांच बोलते हैं तो अपनी उस विशेष अनुभूति को नाम दे रहे होते हैं जो उन समूहों में वस्तुओं की संख्या को देखकर हमारे अंदर पैदा हुई हैं. यह बात कुछ ऐसी ही है जैसे हम सभी ने किसी फूल को 'गेंदा' नाम दिया. यहां गेंदा शब्द एक नाम है वह खुद फूल नहीं है. ठीक ऐसे ही पांच शब्द संख्या विशेष का नाम है, खुद संख्या नहीं है. वह उसे प्रकट करने के लिए एक प्रतीक भर है. इसी तरह जब हम कागज पर इसे एक विशेष आकृति बनाकर प्रदर्शित करते हैं तब वह भी उस संख्या का प्रतीकात्मक प्रदर्शन ही होता है.

आपने एक बात और पूछी है, इन प्रतीकों को जिन्हें हम संख्यांक कहते हैं, लिखा कब जाए. मुझे ऐसा लगता है यह काम थोड़ा ठहर कर, बाद में किया जाए तो बच्चों को सीखने में आसानी होगी.

हरप्रीत ने कहा, एक सवाल मेरे मन में भी उठ रहा है नंदा, इन बातों को शिक्षक जान लें तो इससे बच्चों के सीखने पर क्या फर्क पड़ेगा?

प्रीत यह सवाल तो मैं तुमसे पूछूंगी. इन बातों को समझने के बाद कक्षा में संख्याओं पर काम करने के तुम्हारे तरीके में क्या कोई बदलाव आ सकता है?

नंदा, तुम्हारे विचार, तुम्हारे तरीके मैं एकदम से तो आत्मसात नहीं कर सकती पर चाहती हूं कि तुम्हारी मदद से मैं अपनी कक्षा को बेहतर सीखने वाली कक्षा बनाऊं. इसलिए पूछ रही हूं कि मुझे किन-किन चीजों पर काम करने की जरूरत पड़ेगी. हरप्रीत ने पूछा.

हां नंदा, मैं भी हरप्रीत से सहमत हूं. जो तुम समझ रही हो वह हमें भी बताओ न. सुधा की बात में कुछ और जानने की अकुलाहट थी.

नंदा हंस पड़ी. बोली, देखो मेरी भोली-भाली, प्यारी सहेलियों, मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही हूं. हम मिलकर ही काम करेंगे. वैसे हमें संख्याओं पर काम शुरू करने के पहले कुछ और क्षमताएं बच्चों में विकसित करनी चाहिए. इनके बारे में मैं पहले जिक्र कर चुकी हूं. फिर गिनने की शुरुआत की जा सकती है. और हां, संख्याओं को संख्यांकों के रूप में लिखना सिखाने के पहले संख्या पद्धति को ठीक तरह से समझ लेना चाहिए.

संख्या पद्धति याने क्या नंदा? फिर कोई नई चीज़, है ना? हरप्रीत थोड़ी परेशान हो गई.

नहीं मेरी प्रीतो, कुछ भी नया नहीं. पर हां, इस पर भी कभी बात करेंगे.

एहसान जो काफी देर से चुप थे, उन्होंने कहा, नंदा, आज जो बातें हुई उसे कक्षा में आजमाने में तुम्हें मदद करनी होगी.

जरूर सर, कल हम कक्षा एक में इस पर काम करेंगे.

क्या ये सैद्धांतिक बातचीत कक्षा में व्यावहारिक रूप में परिणित हो पाई?

इसे जानने के लिए अगला अंक पढ़ें.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

लोमड़ी और बकरी

एक समय की बात है, एक लोमड़ी घूमते-घूमते एक कुएं के पास पहुंच गई। कुएं की जगत नहीं थी. उधर, लोमड़ी ने भी इस और ध्यान नहीं दिया. परिणाम यह हुआ कि बेचारी लोमड़ी कुएं में गिर गई.

कुआं अधिक गहरा तो नहीं था, परंतु फिर भी लोमड़ी के लिए उससे बाहर निकलना सम्भव नहीं था. लोमड़ी अपनी पूरी शक्ति लगाकर कुएं से बाहर आने के लिए उछल रही थी, परंतु उसे सफलता नहीं मिल रही थी. अंत में लोमड़ी थक गई और निराश होकर एकटक ऊपर देखने लगी कि शायद उसे कोई सहायता मिल जाए.

लोमड़ी का भाग्य देखिए, तभी कुएं के पास से एक बकरी गुजरी. उसके कुएं के भीतर झांका तो लोमड़ी को वहां देखकर हैरान रह गई.

“नमस्ते, लोमड़ी जी!” बकरी बोली- “यह कुएं में क्या कर रही हो?”

“नमस्ते, बकरी जी!” लोमड़ी ने उत्तर दिया- “यहां कुएं में बहुत मजा आ रहा है.”

हमे बहुत से लागों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

बकरी ने लोमड़ी से कहा तब तो मुझे भी इसका आनंद लेना चाहिए. तब लोमड़ी ने कहा बिल्कुल भी देर मत करो और आ जाओ मेरे साथ हम दोनों मिलकर इसका आनंद उठाते है. और इतना कहकर बकरी भी लोमड़ी के साथ कुआं में कूद जाती हैं. इसके पश्चात लोमड़ी चलाकी दिखाते हुए बकरी के पीठ पर पैर रखकर झट से कुएं के ऊपर आ जाती है.

बाहर आते ही लोमड़ी के मन में बकरी को खाने का विचार आता है. लेकिन वह सोचती है कि इसे मैं बाहर कैसे निकालूं. कुएं के अंदर से बकरी भी लोमड़ी को बाहर निकालने के लिए आवाज लगाती है. तब लोमड़ी बड़े प्यार से कहती है कि रुको मैं अभी तुम्हें निकालने के लिए कुछ इंतजाम करता हूं. और इतना कहकर वह जंगल के अंदर की ओर चली जाती है जहां उसकी मुलाकात जंगल के राजा शेर से होती है. वह शेर को बताती है कि राजा जी मैंने आपके लिए आज अच्छे खाने का इंतजाम

किया है. शेर उससे पूछता है कहां है वह अच्छा खाना. तब लोमड़ी बोलती है इसके लिए आपको थोड़ी सी मेहनत करनी पड़ेगी. इतना कहते हुए वह पूरा घटना शेर को बताती है. फिर उसे कुएं के पास लेकर आ जाती है. वह शेर से कहती है की आप कुएं के अंदर जाइए तथा बकरी को बाहर निकालिए उसके पश्चात मैं भी आपको बाहर निकाल लूंगी. फिर दोनों जन मिलकर इसको बड़े मजे से खा जाएंगे. ऐसा कहकर वह शेर को कुएं में उतार देती है. शेर बकरी को बाहर निकालता है. लोमड़ी अपनी चालाकी दिखाते हुए अकेले ही बकरी को चट कर जाती है. अंदर से शेर सिर्फ चिल्लाता ही रह जाता है. लोमड़ी वहां से नौ दो ग्यारह हो जाती है.

सीख - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें बकरी की तरह अत्यंत सीधा भी नहीं होना चाहिए जो झट से किसी के बहकावे में आ जाए और न ही शेर की तरह जो कि किसी भी तरह के प्रलोभन में आ जाए.

संतोष कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

जैसे ही लोमड़ी ने कहा - कुएं में बहुत मजा आ रहा है, वैसे ही बिना सोचे समझे बकरी मजा लेने के लिए कुएं में छलांग मार देती है. उसे देखकर लोमड़ी बहुत खुश हो गई. चलो कुएं से निकलने का मेरा रास्ता खुल गया. बकरी कहती है - लोमड़ी बहन यहां तो कुछ मजा नहीं आ रहा है. मैं तो यहां आकर फंस गई. लोमड़ी कहती है - नहीं बहन मेरे पास एक तरकीब है, यहां से निकलने की. आप दो पैर पर खड़ी हो जाओ. मैं आपकी पीठ के सहारे छलांग मारकर बाहर निकलती हूं. उसके बाद मैं तुम्हें भी निकाल लूंगी. बाहर निकल कर हम दोनों मजा लेते हैं.

भोली बकरी फिर से उसके बातों पर आकर दो पैर के सहारे खड़ा हो जाती है. लोमड़ी छलांग मारने वाली होती है उसी समय बकरी को समझ में आ जाता है कि लोमड़ी मुझे फिर से धोखा दे रही है. अब इसके झांसे में नहीं आने वाली हूं. यह सोचकर वह पैर नीचे कर लेती है और लोमड़ी से कहती है - तुम धोखेबाज और चालाक हो. तुम्हारे अंदर कपट की भावना है. मैं अब तुम्हारी बातों में नहीं फ़ंसूंगी

इधर बकरी का दोस्त बंदर, पेड़ पर बैठा रहता है, जो यह सब लोमड़ी की चालाकी को देखता रहता है. बंदर भी समझ जाता है कि लोमड़ी चालाक है. इसको आज सबक सिखाने की जरूरत है. सोचकर कुएं के पास आता है. बकरी को निकालने के लिए अपनी पूंछ को कुएं के अंदर डाल कर अपनी दोस्त बकरी से कहता है - तुम मेरी पूछ के सहारे कुएं से बाहर निकल जाओ. मैं तुम्हारी सहायता करता हूं. बकरी बंदर की पूंछ को पकड़कर कुएं से बाहर निकल जाती है.

इधर लोमड़ी, बंदर और बकरी से कुएं से निकालने के लिए बार-बार प्रार्थना करती है, लेकिन बंदर और बकरी उसे बाहर नहीं निकलते. बन्दर लोमड़ी से कहता है कि तुम बहुत चालाक हो. वन में रहने वाले सभी जीव जंतुओं से चालाकी करके अपना काम निकाल लेती हो. इस बार तुम्हारी चालाकी काम में नहीं आएगी. जैसा बीज बोया है वैसा फल पाओगी. ऐसा कहकर बकरी और बंदर अपने-अपने घर चले जाते हैं. लोमड़ी को अपने किए पर पछतावा होता है.

उसी समय भालू भोजन की तलाश में घूमते हुए कुंएं के पास आ जाता है. लोमड़ी को कुएं के अन्दर देख कर भालू बहुत खुश होता है और वह लोमड़ी को अपना शिकार बना लेता है.

शिक्षा - हमें सोच समझकर कार्य करना चाहिए. असत्य का मार्ग अपनाते हैं तो उसका परिणाम एक ना एक दिन हमें भोगना पड़ता है अतः हमें सत्य के मार्ग पर हमेशा चलना चाहिए.

सेवती चक्रधारी व्दारा पूरी की गई कहानी

लोमड़ी तो थी बहुत चालाक. उसे भूख भी लग रही थी. उसने सोचा कि किसी तरह इस बकरी को कुएं के अंदर बुला लूं तो भोजन का बंदोबस्त हो जाएगा. लोमड़ी ने बकरी से कहा - यह बात किसी को मत बताना. यह कोई साधारण कुआं नहीं है जादुई कुआं है. इसके अंदर आकर तुम जो मांगो वह मिल जाता है. हां! पर यह कुछ-कुछ समय के अंतराल में होता है. मैंने अभी-अभी अपनी पसंद की खीर-पूड़ी खाई है. बकरी बहुत सीधी थी, तो उसकी बातों में आ गई. वह बोली - अच्छा! तो तुम मेरे लिए भी कुछ मांग दो न. इस पर लोमड़ी बोली - इसके लिए तुम्हें खुद ही कुएं के अंदर आना होगा. बकरी ने थोड़ा सोचा और बोली - यदि मैं कुएं में आई तो तुम मुझे खा जाओगी. इस पर लोमड़ी तुनक कर बोली - ये लो, भलाई का तो ज़माना ही नहीं रहा. जब मुझे बिना मेहनत के बैठे बिठाए खाना मिल रहा है तो मैं तुम्हें क्यों खाऊंगी? मुझे जो बताना था मैंने तुम्हें बता दिया. आगे तुम्हारी मर्जी. अब

बकरी को लोमड़ी की बातों पर विश्वास होने लगा और वह बिना विचारे कुएं में कूद गई. इस तरह लोमड़ी ने बड़ी चालाकी से बकरी को अपना शिकार बना लिया.

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी

लोमड़ी के दिमाग में अब अपनी जान बचाने के बजाय किसी भी तरह से बकरी को कुएं के अंदर बुलाकर उसे मार कर खाने की बात आ गई. उसने बकरी को भी कुएं के अंदर नहाने के लिए बुलाया. बकरी ने सोचा कि ये चालाक लोमड़ी कुएं के अंदर मज़े कैसे कर सकती है जबकि वह कुएं में डूब रही है अब बकरी को समझ आ गई कि लोमड़ी कुएं में फंस गई है परंतु मुझे मारकर खाने के लालच में वह मदद मांगने के बजाय मुझे ही कुएं के अंदर बुलाकर मारना चाहती है. बकरी ने लोमड़ी से कहा कि आप कुएं में अकेले ही मज़ा करो, मुझे अभी अपने बच्चों को दूध पिलाना है. ऐसा कहकर बकरी वहाँ से चली गई. इधर लोमड़ी को अपनी चालाकी भारी पड़ गई और वह कुएं में कई दिनों तक डूबे रहने के कारण मर गई.

सीख - हर समय चालाकी दिखाना कभी-कभी भारी पड़ जाता है.
अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

लोमड़ी और सारस

एक बार की बात है, एक जंगल में चालाक लोमड़ी था जो हर किसी जानवर को अपनी मीठी बातों में फंसा कर कुछ न कुछ ले-लेता था या खाना खा लेता था. उसी जंगल में एक सारस पक्षी रहता था. लोमड़ी ने अपने चालाकी से उसे दोस्त बनाया और खाने पर घर बुलाया. सारस इस बात पर खुश हुआ और लोमड़ी के घर खाने बार जाने के लिए आमंत्रण स्वीकार कर लिया.

अगले दिन सारस, लोमड़ी के घर खाने पर पहुंचा. उसने देखा लोमड़ी उसके लिए और अपने लिए एक-एक प्लेट में सूप ले कर आया है. यह देख कर सारस मन ही

मन बड़ा दुखी हुआ क्योंकि लम्बे चोंच होने के कारण वह प्लेट में सूप नहीं पी सकता था.

लोमड़ी ने चालाकी से सवाल पुछा - मित्र सूप कैसा लग रहा है. सारस ने उत्तर दिया - यह बहुत अच्छा है पर मेरे पेट में दर्द है इसलिए में नहीं पी पाउँगा और वह चला गया.

अब इस अधूरी कहानी को जल्दी से पूरा करके हमें भेज दो. कहानी भेजने का ई-मेल है - dr.alokshukla@gmail.com. कहानी तुम वाट्सएप से 7000727568 पर भी भेज सकते हो. सभी अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर संतोष कौशिक जी ने कहानी लिखकर भेजी है जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

कर्म का फल

लेखक - संतोष कौशिक

तालाब के किनारे में टोपीवाला एक मेंढक रहता था।जो तालाब में स्नान करने वालों का राह देखते रहता था. जो भी तालाब में स्नान करने के लिए आता, वह मेंढक स्नान करने वालों का कपड़ा साफ करता, किसी को नहलाता, जो भी तालाब से

संबंधित कार्य रहता, वह सब कार्य करता था. सब मेंढक के कार्य से खुश होकर उसे धन्यवाद देते थे.

एक दिन सुबह से मेंढक स्नान करने वालों की राह देख रहा था. उसी समय एक असहाय महिला, फटे हुई कपड़े पहने हुए, तालाब की ओर आ रही थी. उसे देखकर मेंढक दौड़कर उस महिला को सहारा देते हुए तालाब के पास लाकर, उसके गंदे कपड़े साफ किये. महिला को ध्यान पूर्वक अपनी मां की तरह स्नान करवाकर तैयार किया. महिला उस मेंढक को देखकर मन ही मन सोचने लगी कि इतना सेवा तो मेरे पुत्र भी होते तो नहीं करते. जितनी सेवा यह मेंढक कर रहा है. उस महिला ने खुश होकर आशीर्वाद देते हुए कहा कि- जाओ बेटा सदा सुखी रहो, तुम्हारे व्दारा पूर्व में किए हुए पाप नष्ट हो जाएं. तुम्हारी जिंदगी में सदा खुशहाली बनी रहे. कहते हुए महिला मेढ़क के सिर पर हाथ रखती है. जैसे ही सिर पर हाथ रखती है वैसे ही वहां तेज सूर्य की किरणें चमकने लगती हैं और वह मेंढक एक राजकुमार के रूप में दिखाई देता है. उसे देख कर महिला कहती है बेटा तुम कौन हो अभी तो तुम मेढ़क थे यह सब कैसे हुआ.

तब वह राजकुमार अपनी पिछली जिंदगी के बारे में महिला को बताता है, कि - मैं पूर्व में इस राज्य का राजकुमार था. एक दिन मैं शिकार करने जंगल गया था. जंगल में एक भूखी प्यासी, फटे हुई कपड़े वाली बुढ़िया से मुलाकात हुई. उसने मुझसे कहा - बेटा मैं बहुत दिनों से भूखी प्यासी हूं. मुझे पानी पिला दो. पानी के लिए मुझसे बार-बार याचना की. लेकिन मैं ठहरा राजकुमार. मेरे अंदर घमंड की भावना थी. मैने उससे कहा कि मुझसे बात करने की तुम्हारी औकात ही क्या है. मैं तुम्हारा नौकर हूं

क्या? तुम्हारे शरीर से बदबू भी आ रही है. ऊपर से मेंढक की तरह टर्र-टर्र चिल्ला रही हो. उस बुढ़िया ने क्रोधित होकर मुझे श्राप दिया कि तू मुझे मेंढक बोल रहा है. तू अभी तुरंत मेंढक बन जा और कीचड़ में रहकर टर्र-टर्र चिल्लाना. तब पता चलेगा कि गंदगी क्या होती है. उसी समय से मैं राजकुमार से मेंढक बन गया. फिर उस बुढ़िया से, पाप मुक्त होने के लिए मैंने बहुत क्षमा मांगी लेकिन बुढ़िया ने क्षमा नहीं किया. कुछ देर बाद बुढ़िया शांत होकर बोली - बेटा मेरे व्दारा दिया गया श्राप तो वापस तो नहीं होगा, लेकिन तुम दीन दुखियों की सेवा करोगे तो अगर कोई तुम्हारी सेवा से खुश होकर, पाप मुक्त होने का आशीर्वाद देगा तो उसी दिन से तुम श्राप से मुक्त हो जाओगे और पुन: राजकुमार बन जाओगे. आज आपने मुझे आशीर्वाद देकर पाप से मुक्त कर दिया मैं आपका आभारी हूं. अब मैं दीन दुखियों की हमेशा सेवा करूंगा. किसी की आत्मा को कष्ट नहीं दूंगा.

उस महिला का कोई परिवार नहीं था. राजकुमार ने उस असहाय महिला को अपने घर ले जाकर दादी मां की तरह सेवा की. राजकुमार व असहाय महिला दोनों खुशी-खुशी रहने लगे.

शिक्षा - हमें दीन दुखियों की सेवा करनी चाहिए. किसी भी पद पर हो हमें तो भी घमंड नहीं करना चाहिए.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

<u>नवाचार - कक्षा में जन्मदिन मनाना</u>

आलेख एवं चित्र - मनोज कुमार पाटनवार, पू मा. शाला कालीपुर, प्रेमनगर, सूरजपुर

कुछ वर्ष पहले मेरे स्कूल में बच्चों की उपस्थिति बहुत कम होती थी किंतु स्कूल में कुछ न कुछ गतिविधि कराते रहने से अब बच्चों की उपस्थिति में अच्छी खासी वृध्दि हुई है. इसी कड़ी में स्कूल के किसी भी बच्चे का जन्मदिन रहता है तो उसे सुबह प्रार्थना सभा में सब के सामने जन्मदिन की बधाई एवं स्कूल की ओर से लेखनी उपहार स्वरूप दी जाती है. सभी बच्चों व्दारा तालियों के साथ बधाई देना किसी भी बच्चे के जन्मदिवस को खास बना देता है. इस तरह से अभिभावक भी बच्चों को स्कूल भेजने में रुची रखते हैं.

15 नवंबर को कक्षा 8 वीं की मोनिका एवं टालिका दोनों बहनों को परंपरानुसार प्रार्थना में जन्मदिन की बधाई दी गई एवं उपहार भी दिया गया. उसके बाद शैक्षणिक गतिविधि चलती रही. लगभग 3:30 बजे उनके पिता केक एवं मिक्चर (नमकीन) लेकर स्कूल पहुंचे और कहने लगे कि मेरे बच्चों को केक काटकर जन्मदिन यहीं मनाना है. यदि आप अनुमति देते हैं तो मुझे भी खुशी होगी और मेरे बच्चों की इच्छा भी पुरी होगी.

दोनो बच्चियों ने भी कहा कि घर पर न तो शिक्षक और न ही साथी सहपाठी उपस्थित रह पाएंगे. यहां आप सभी शिक्षक एवं अपने साथियों के बीच में हम ज्यादा खुशी का अनुभव करेंगे. उनकी इन बातों को सुनकर मैं सोचने लगा कि मेरे स्कूल के बच्चे सीख रहे हैं और पालक भी जागरूक हो रहे हैं. मैने अनुमति दी और ख़ुशी खुशी केक काटकर सभी बच्चों ने दोनो बच्चियों का जन्मदिन मनाया. सबने बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लिया.

White and black

Author - Sewati Chkradhari

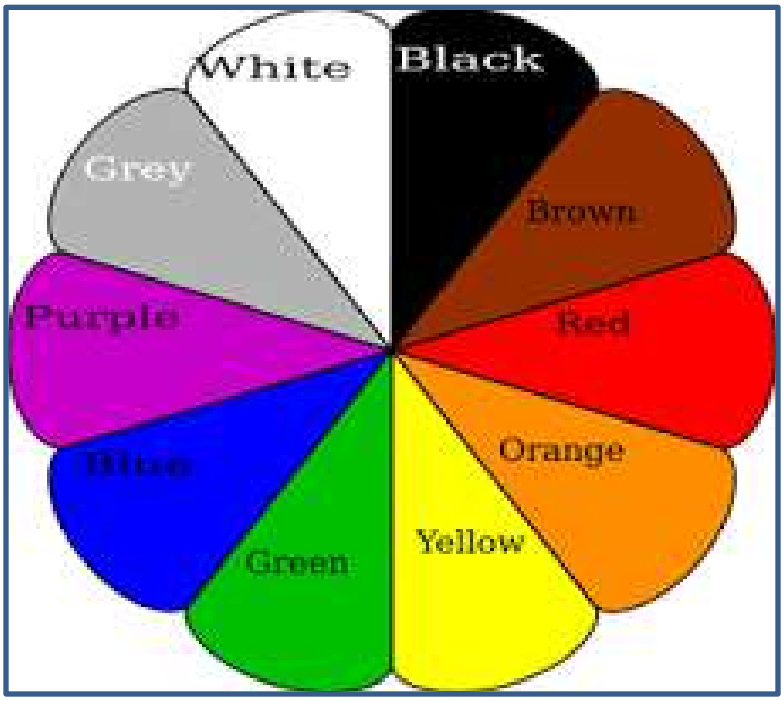

White and black

Tick tock says the clock

Green and red

Don't jump on the bed

Pink and yellow

I sleep with pillow

Orange and blue

Speak always true

Happy New Year

Author - Tikeshwar Sinha Gabdiwala

O my dear!
Happy New Year
Do sing a song
Ding-dong, ding-dong
Play the big drum
Tarah-rum pum-pum
You do have a chance
So, make me dance
Then clap and Cheer
Happy New Year

Try again

Author - Name-Devika Sahu

Just try again.

Have a fresh start.

Winning and losing

It's just a part.

Why to think what others think?

Just write your story with your own ink.

Why to live in past where life gets rotten?

With a new leap let old fall forgotten.

I may sound so childish,

But it's my mind game.

Why to grow up if it makes you tame?

Laugh with the people who laugh at you.

Why cry for a failure or two?

You've just lost a game,

Not your name.

Your people love you,

Not your fame.

You never lose everything,

You always learn something.

If you once fail just be a sane.

Just try again.

<u>नवाचार - इको क्लब</u>

लेखक - पेशवर यादव

उद्देश्य: - इको क्लब व्दारा सोया दूध पॉलीथिन का वेस्ट मटीरियल से बेस्ट मटेरियल का निर्माण.

सामग्री: - अनुपयोगी पॉलीथिन, पुट्टा, सेलोटेप एंव एस्टेप्लर प्लास्टिक बोतल

क्रियाविधि: - शाला में नवगठित इको क्लब व्दारा शासन के कुपोषण आधारित महत्वाकाँक्षी सोयादूध योजना से अनुपयोगी पॉलीथिन पैकेट एंव पुट्ठों को शाला से बाहर न फेककर उसे बेस्ट मटेरियल बनाया जा रहा है जैसे चाक रखने, विज्ञान कीट रखने कबाड़ से जुगाड़ वस्तुए को रखने बनाने एंव पुट्ठों का अन्य वस्तुओं को रखने

के लिए उपयोग किया जा रहा है. प्लास्टिक बोतलों का प्रयोग विज्ञान से सम्बंधित कबाड़ से जुगाड़ के लिए किया जा रहा है.

लाभ: - बच्चों कला, सृजन कौशल में निपुण हो रहे है. बच्चों में अपनी-अपनी टीमों के आधार से नेतृत्व क्षमता में विकास हो रहा है. पर्यावरण संरक्षण से संबंधित जानकारी बच्चे सीख रहे है.

लोगों को सन्देश: - बच्चों व्दारा अपने घरों में भी अनुपयोगी पॉलीथिन, वस्तुएं, प्लास्टिक बोतल से लोगों को वेस्ट मटेरियल से बेस्ट मटेरियल बनाने के लिए प्रेरित कर रहे है. लोगों को स्वछता के प्रति जागरूक कर रहे है.

भविष्य में योजना: - चटाई, टेबल क्लाथ के रूप में.

आओ मिल त्यौहार मनाएं

लेखिका - श्वेता तिवारी

आओ मिल त्यौहार मनाएं

हम सबके हैं सभी हमारे

सबसे मिल त्यौहार मनाएं

होली के रंग खेले

दीवाली के सब दिए जलाएं

ईदी ले अम्मी के हाथों

मीठी मीठी सेवई खाएं

ईसा मसीह का जन्म दिवस

या लीलाएँ हो राम की

गुरुपूरब ओणम और राखी

विजयदशमी कृष्ण की झांकी

किसी घर व्दार ना रहे अंधेरा

ऐसा उजियारा दिखाएं

सांता क्लॉस घर घर जाए

नए-नए उपहार दिलाए

कहीं कोई भूखा ना प्यासा

ऐसा कुछ जादू दिखाएं

छलका कर मस्ती का प्याला

गम सारे हम दूर भगाएं

खेले कूदें गाना गाए

नाच नाच कर धूम मचाए

आओ मिल त्यौहार मनाए

हम सबके हैं सभी हमारे

सबसे मिल त्यौहार मनाएं

आम फलों का राजा है

लेखिका - सुधा उपाध्याय

मटकू दादा हलवाई की

एक छोटी सी है दुकान

चुनिया- मुनिया सैर पे जाते

लेकर आते खूब सामान

गरम जलेबी दूध मलाई

खाकर सब ने धूम मचाई

हंसते गाते शाला आई

नाच कूद कर करी पढ़ाई

अ से अनार आ से आम

मिलकर होता सारा काम

आम फलों का राजा है

खाओ ताकत लाता है

आसमान पर

लेखक - नेमीचंद साहू

नीला-नीला अम्बर देखो

कितना सुंदर कितना प्यारा

फ़ैला उजियारा चारों ओर

जैसे हो आंखों का तारा

लाल-लाल गोले के जैसा

निकला सूरज आसमान पर

बनकर दूल्हा निकल पड़ा है

मंगल गाते घर-घर पर

सितारों को लेकर साथ

देखो चली हैं चंदा रानी

चमके चांदनी गगन पर

लगे सुंदर रंग आसमानी

कछुआ और खरगोश

लेखिका - प्रिया देवांगन प्रियू

कछुआ और खरगोश
हुई दोनो में रेस
बहुत घमण्डी था खरगोश
मारता था वह टेस
दोनों में एक बात चली
चलो लगाएँ रेस

हाथी आया बंदर आया
आया जंगल का राजा
चिड़िया रानी गाना गाई
लोमड़ी ने बजाया बाजा

दोनो निकले रेस लगाने
खरगोश ने दौड़ लगायी
धीरे-धीरे चलकर कछुआ
मंद-मंद फिर था मुस्काया

थक कर बैठा गया खरगोश
खाने लगा वह गाजर
खाते-खाते वहीं सो गया
अपनी नाक बजाकर

कछुआ आया धीरे-धीरे
देखा खरगोश को सोते
निकल पड़ा वह आगे भैया
बहुत ही खुश होते-होते

नींद खुली जब खरगोश की
फिर से दौड़ा होकर खुश
जीत गया पीर कछुआ राजा
ख़रगोश को हुआ दुःख

आया जंगल का राजा
कछुआ को दिया पुरस्कार
घमंडी एक खरगोश का
हो गया तिरस्कार

छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल - काम सिरजथे मिहनत मा

लेखक - बलदाऊ राम साहू

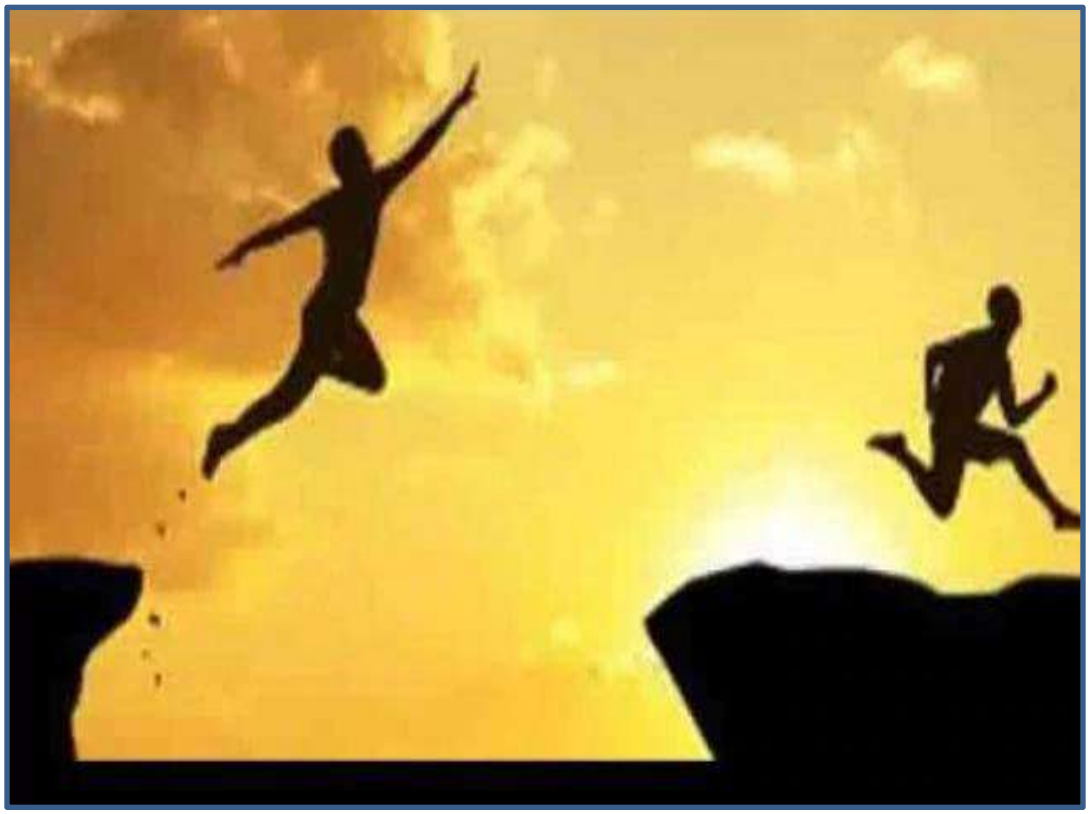

नियम नवा बनाये परही।

सबले आगू जाये परही।

कब तक सोचत रहिहू तुम मन,

भाग अपन अजमाये परही।

काम सिरजथे मिहनत मा जी

बात सबो ल बताये परही।

एक ले भले जी दू कहाथे,

मिल के काम सधाये परही।

हिजगा मा तो काम बिगड़थे,

बात समझे, समझाये परही।

काम सिरजथे = कार्य पूर्ण होता है, काम सधाथे = कार्य सिध्द होता है,

हिजगा = काम एक दूसरे पर डालना।

कुंडलियाँ - बाबा गुरु घासीदास

लेखक - डिजेंद्र कुर्रे कोहिनूर

सन्देशा गुरुदेव का

मानव सभी समान

सत्य ज्ञान जो पा सकें

वह ही है इंसान

वह ही है इंसान

ज्ञान को जिसने जाना

मानव सेवा धर्म

ज्ञान को सबकुछ माना

कह डिजेंद्र करजोरि

नही हो अब अन्देशा

सदा बढ़ाये मान

अमर है गुरु सन्देशा

गिनती

लेखक - लेखक-लुकेश्वर सिंह ध्रुव

एक गाँव मा दो झन चोर चोरी करिस

तीन आदमी देख डारिन

चार गोड हाथ ला बाँध दिन

पांच पंच पंचायत बैठिन

छःरुपिया जुर्माना होईस

सात दिन के जेल होईस

आठ सिपाही धरके लीन

नौ नम्बर के कमरा में

दस दंडा देके बंद कर दिस

गोंदली के भाव

(रोला छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

बाढे हावय भाव, गोंदली के गा भारी
कहाँ मिठावय साग, देय भौजी ला गारी
बैपारी के राज, सोन कस वोला तौले
आँसू आवत आज, गोंदली ला बिन पौले

हलाकान सब होय, सबो के कीमत बाढ़े
धनिया लहसुन प्याज, सरत हे माढ़े माढ़े
सोंचय 'माटी' आज, चलावय कइसे खरचा
गाँव गली अउ हाट, एकरे होवत चरचा

चमन ये चमन है ये अपना चमन

लेखक एवं चित्र - त्रिलोकी नाथ ताम्रकार

चमन ये चमन है ये अपना चमन

इस चमन में खिले हैं लाखों सुमन

हर सुमन का कथन है ये मेरा वतन

नहीं सिक्ख ईसाई कोई हिंदू मुसलमान

हर कोई गा रहे गीत वतन का

रंग रूप जाति धरम का संगम

चारों दिशा गूंज रहे जन गण मन

कहे धरती गगन है ये मेरा वतन-मेरा वतन।

घर-घर लहराया देखो प्यारा तिरंगा

ये तो निशां बन गया चैन अमन का

सत्य अहिंसा त्याग प्रेम का परचम

हर कोई बोल रहे वंदे मातरम

कहे धरती गगन है ये मेरा वतन-मेरा वतन

चमन ये चमन है ये अपना चमन

चलो बाजार

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

दोनों हाथों में लेकर झोला
मनु बाड़ी में जाकर बोला

सुनो सब्जियों ! हो जो भी
भटा मूली सेम गोभी

अरे हो जाओ अब तैयार
तुम्हें चलना है जी बाजार

कान देकर सबने सुना
कुंदरू करेला टमाटर तुमा

मिर्ची के संग मेथी इतराई
टिंडा कद्दू डोड़का तोराई

हरी-हरी भिण्डी मुस्काई
पालक धनिया और चवलाई

छत्तीसगढ़ के महिमा

लेखक - तुलस राम चंद्राकर

छत्तीसगढ़ महतारी के

हवय जबर के छाती

महर महर ममहावय रे

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

उड़त बुडत ले मेहनत करथे

इहाँ के नर अउ नारी

सब तीरथ ले बड़े तीरथ

इहाँ के खेती बारी

मोहन भोग सही कस लागे

खेत म चटनी बासी

महर महर ममहावय रे

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

माथ ले चूहे पसीना पीके

हासे डोली धनहा

सूघ्घर बाली खेत म देख

हरीयर सबके मन हा

इहाँ के माटी चंदन जईसे

महिमा हे बड़ थाती

महर महर ममहावय रे

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

सुआ, ददरिया, भोजली करमा

गीत आनी बानी

आजादी बर लहू बोहाइन

इंहा के अमर सेनानी

फागुन के पिचकारी

दीवारी के दिया बाती

महर महर ममहावय रे

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

शिवरीनारायण, सिरपुर, राजीम

भोरमदेव सिहावा

हमर चिनहारी हसदेव बान्गो

अउ गंगरेल दुधावा

बाटे अंजोरी कोरबा के

भिलाई लोहा लोहाटी

महर महर ममहावय रे

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

छत्तीसगढ़ी भाखा

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

मीत मयारु गीत के भाखा
बरखा गरमी सीत के भाखा
करमा गेंड़ी गौर ककसार
सुआ पंथी निरित के भाखा
पंडवानी भरथरी घोटूलपाटा
चंदैनी ददरिया पिरित के भाखा

पोटा लमसेना पायसोतुर
सुघर भड़ौनी गीत के भाखा
हरेली छेरछेरा नवाखाई
चेतरई गोंचा रीत के भाखा
सुआ पँड़की कोयली परेवा
कोलिहा हाथी मीत के भाखा

अईरसा चौसेला ठेठरी खुरमी
गुलगुला देहरौरी मीठ के भाखा
देवर - भउजी सारी -भाटो
समधी समधन मित के भाखा
मस्तुरिया तीजन बैसनव मीर -अली
धुरवाराम दुखिया के गीत के भाखा

जंगल में

लेखक - बलदाऊ राम साहू

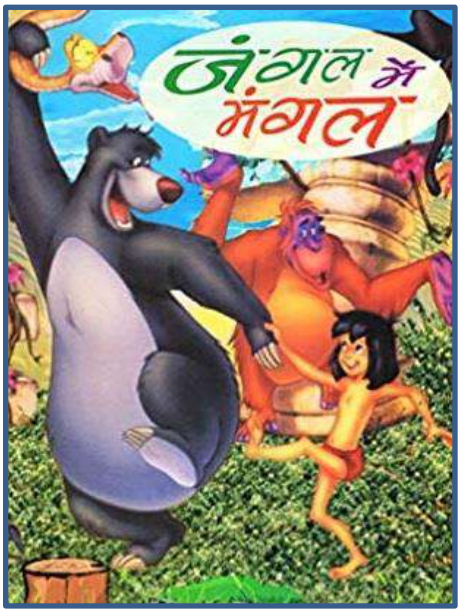

बंदर मामा बजा रहे थे

ताल मिलाकर ढ़म-ढ़म ढ़ोल

और बंदरिया गा रही थी

चंदा गोल जी सूरज गोल

साथी बंदर दौड़े आये

मारा ठुमका नाच दिखाये

गीदड़ लोमड़ी और सियार

सबने अपने राग मिलाए

भालू आया हिरन भी आए

वे भी झूमे नाचे गाए

हंसी-खुशी के इस अवसर पर

जंगल में सब खुशी मनाएं

<u>जाड़ ह जनावत हे</u>

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

चिरई-चिरगुन पेड़ में बइठे, भारी चहचहावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे
हसिया धर के सुधा दीदी, खेत डहर जावत हे
धान लुवत-लुवत दुलारी, सुघ्घर गाना गावत हे
लू-लू के धान के, करपा ल मढ़ावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

पैरा डोरी बरत सरवन, सब झन ल जोहारत हे
गाड़ा-बइला में जोर के सोनू, भारा ल डोहारत हे
धान ल मिंजे खातिर सुनील, मितान ल बलावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

पानी ल छुबे त, हाथ ह झिनझिनावत हे
मुँहू में डारबे त, दांत ह किनकिनावत हे
अदरक वाला चाहा ह, बने अब सुहावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

खेरेर-खेरेर लइका खाँसत, नाक ह बोहावत हे
डाक्टर कर लेग-लेग के, सूजी ल देवावत हे
आनी-बानी के गोली-पानी, टानिक ल पियावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

पऊर साल के सेटर ल, पेटी ले निकालत हे
बांही ह छोटे होगे, लइका ह रिसावत हे
जुन्ना ल नइ पहिनो कहिके, नावा सेटर लेवावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

रांधत - रांधत बहू ह, आगी ल अब तापत हे
लइका ल नउहा हे त, कुड़कुड़-कुड़कुड़ कांपत हे
स्कूल जाय बर जल्दी से, तइयार ओला करवावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

घर में बइठे-बइठे बबा, बिड़ी ल सुलगावत हे
घाम तापत-तापत बने, नाती ल खेलावत हे
जांघ में लइका सूसू करदिस, बबा ह खिसियावत हे
सुरूर-सुरूर हवा चलत, जाड़ ह अब जनावत हे

धूप

लेखक - बलदाऊ राम साहू

सुबह - सुबह आती है धूप।

हँसती, खिलखिलाती है धूप।

रोज बिहाने औषधि-सी लगती,

दुपहरी में डराती है धूप।

आ जाती है चोटी को छूकर,

सागर को गरमाती है धूप।

लेकिन साँझ ढल जाती है जब

जानें कहाँ छिप जाती है धूप।

<u>नववर्ष की शुभकामनाएं</u>

लेखक - संतोष कुमार कौशिक

आपकी ज़िंदगी में खुशियों की बहार आए

आपको देते हैं हम नववर्ष की शुभकामनाएं

आपका प्यार जो हमने है पाया

हम पर बनी रहे सदा आपकी छत्रछाया

ये प्यार सदा ऐसा ही हम पर बनाएं

आपको देते हैं हम नव वर्ष की शुभकामनाएं

सभी शिक्षक साथी अपने स्कूल में पढ़ाते हैं

नई-नई विधाओं से बच्चों को समझाते हैं

नवाचार स्कूल तक ही सीमित नहीं उसे आगे बढ़ाएं

आपको देते हैं हम नववर्ष की शुभकामनाएं

नम्र सदा तुम रहना प्यारे, तभी श्रेष्ठ कहलाओगे

नम्र रहोगे तभी बालकों, जीवन की कली खिलाओगे

आपका जीवन खुशियों से भर जाए

आपको देते हैं हम नववर्ष की शुभकामनाएं

लेखक हूं, न कवि हूं, लिखता हूं दिल की बातें

बच्चों के बारे में सोचता हूं दिन रातें

गलती हो तो क्षमा कीजिए ये है हमारी भावनाएं

आपको देते हैं हम नववर्ष की शुभकामनाएं

पढ़ो आगे बढो

लेखिका - नंदा देशमुख

पढ़ो आगे बढो, पढ़ना जीवन की शान,

पढने से उन्नति होती, जीवन बनता महान,

होते हम संस्कारवान, पढ़ना है संजीवन,

हम सदा सीखते रहते, चलती पढ़ाई आजीवन,

पढने से पुरुषार्थ आता ,आता वैभव जीवन में,

पढाई का महत्व उतना, जितना फूल चमन में,

जो पढता,वो गढ़ता,सुधार समाज छूता गगन,

उठो प्रेरणा स्रोत बनो, पढ़ने का करो जतन

पेड़ लगावव (कुकुभ छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

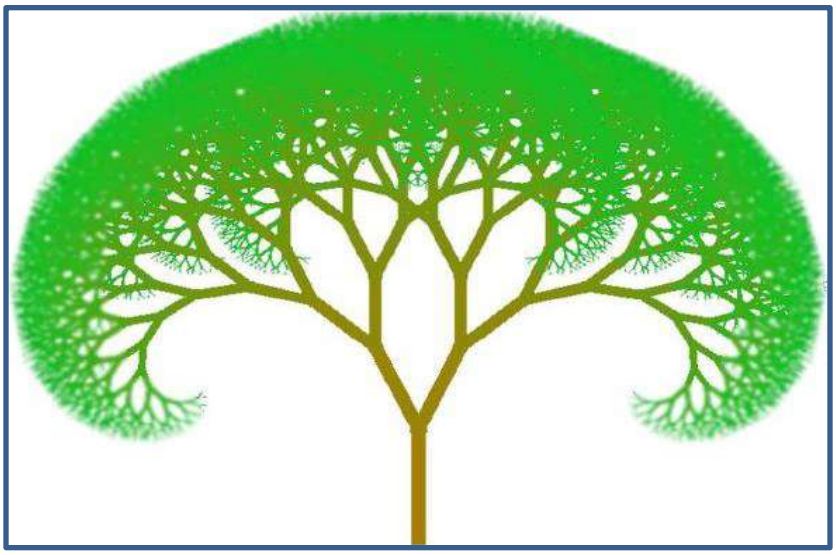

पेड़ लगावव मिलजुल संगी, तभे तुमन फल पाहू जी ।
बड़का होही बिरवा तब तो, सबझन छँइहा पाहू जी ।।1।।

मिलही छँइहा घर अँगना मा, पंछी के होही डेरा ।
चिरई चिरगुन चहकत रइही, रोज लगाही जी फेरा ।।2।।

सुघ्घर खुशबू आही घर मा, छाया मा सुरताहू जी ।
पेड़ लगावव मिलजुल संगी, तभे तुमन फल पाहू जी ।।3।।

जंगल झाड़ी रहिथे तब तो, होथे जी बरसा पानी ।
धान पान सब बढ़िया होथे, चलथे सुघ्घर जिनगानी ।।4।।

आज लगालव सबझन बिरवा, नइते सब पछताहू जी ।
पेड़ लगावव मिलजुल संगी, तभे तुमन फल पाहू जी ।।5।।

बासी

लेखक एवं चित्र - संतोष कुमार साहू प्रकृति

१

मय छत्तीसगढ़ के बासी अंव, मय छत्तीसगढ़ के बासी।

तीनेच दिन के तियासी बासी, मही म मजा बताथंव।।

नून मिरचा मोर संगवारी, नगरिहा बर मय कांशी अंव।।

२

गोंदली लसुन के चटनी म, अंगरी चांट के खाथव।

खेत खार कमैया संग म, अथान म मजा बताथंव।।

मोर पसिहा ह किसनहा मन के, जनम के पियास बुझाथंव।।

३

अंगाकर मोरे नान्हें भाई, परसा पान म चुर जाथे।

घी अउ तेल लगाके गा, सिलपट्टा चटनी संग म खाथव।

चुर्रुस चुर्रुस बाजथे ओहा, पेट भरहा सब झन खाथव।।

४

खपुर्री बेचारी जनम के टेटकी, उलट पुलट चुर जाथे।

झोझो संग म चांट चांट के, माई पिला ह खाथे।

चाहे सुख्खा चाहे तेलहा, मोर नान्हे बहिनी कहिथे।।

५

बड दलगिरहा मुठिया रोटी, कराही म नाच देखाथय।

जादा खाबे पेट पिराथे, बिमरहा बन जाथव।।

ममहावत हे तिल के फोरन, कराही ल चांट के खाथव।।

६

जनम भसर्रा चंउर के चीला, भोभला घलो ह चबाथय।

कतको खाबे पता नई चलय, पेट घलो गुडगुडाथय।।

बेरा कुबेरा दंउडत रहिबे, तरिया घाट म जाके।।

७

फरा ह मोर मयारू मोसी, देवारी तिहार म आथे।

घर घर म सुरहुती पुजा, लक्ष्मी म ल भोग लगाथे।।

जरहा दीया ल काये कहिबे, सोंद सोंद ममहाथे।।

८

मुहुं फुलोथे पातर रोटी, चुल्हा भितर चुर जाथय।

आलु चना के संगेच म, अडबड मजा उडाथय।।

चाहे लैईका चाहे सिअनहा, चखल चखल के खाथय।।

९

नींबु के चटनी सबो के संग म, मित मितानी बनाथय।

बैरी भावे ल नई तो राखय, सब संग म मिल जाथय ।।

प्रकृति ह सब ल काहत हावय, बासी सही मिठातेव।।

माटी

लेखक - बलराम नेताम

फुतका खेलन, झून्ना झूलन

अव खेलन, भंवरा बाटी

बड़ सुघ्घर हे छत्तीसगढ़ के माटी

इही माटी मा, करम ला क

इही माटी मा, जनम धरेहन

इही माटी मा, करम ला करबो

ऐही माटी मा,एक दिन मर जाबो

माटी के हड़िया, अव हे थारी

माटी म बने हे महल अटारी

माटी के महिमा हे, संगी भारी

जिंहा कबीर के सुंदर बानी हे

जिंहा गंगा बरोबर महानदी पैरी के पानी हे

जिंहा के माटी म हे, रुखराई घाटी

बड़ सुघ्घर हे छत्तीसगढ़ के माटी

मिट्ठू भजय

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

मिट्ठू भजय राम राम
हर घड़ी सुबह-शाम

खावय मिर्ची लाल लाल
जय गोपाल जय गोपाल

पिंजरा ले वो निकल के
थोरिक एती-वोती चल के

कान टेंढ़ के कुकुर सुनय
टुकुर-टुकुर बिलई देखय

घर-दुआर भर घूमय
रिसी-मुनी मिट्ठू लगय

घर भर होवय जयकारा
सुनय सब आरा-पारा

मुर्गा बोला

लेखक - बलदाऊ राम साहू

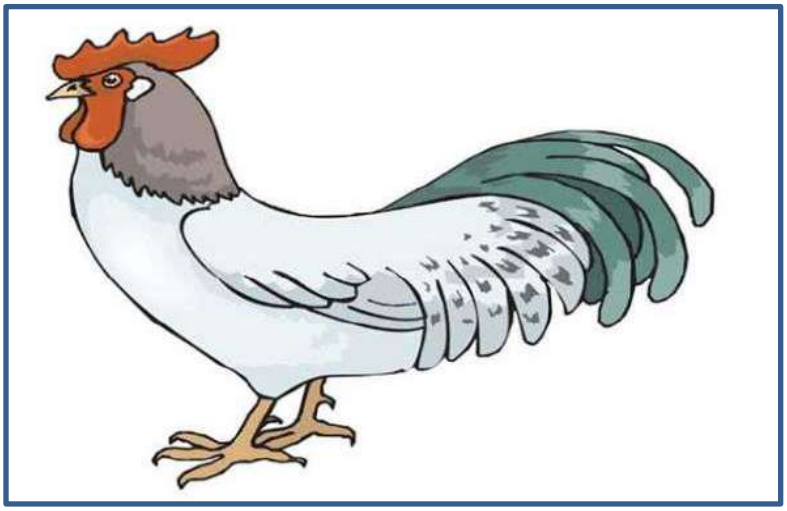

मुर्गा बोला कुकडूं कूं

हुआ सवेरा उठ जा तू

अब तक क्यों तू सोया है

जो सोया वह खोया है

देखो वह सूरज आया

पूरब का मन हरषाया

पंछी गा रहे हैं गीत

प्रकृति का मधुर संगीत

जब-जब भौंरे गाएंगे

तब-तब फूल मुसकाएंगे

मै सरहद पर जाऊंगा

लेखिका - सेवती चक्रधारी

मै सरहद पर जाऊंगा

मां! मुझको तु बन्दूक दे दे

मै शरहद पर जाऊंगा।

देश की रक्षा के खातिर

सीने में गोली खाऊंगा।

नहीं डरूंगा दुश्मन से

शेर सी दहाड़ लगाऊंगा।

एक एक को चुन चुन कर

मौत की नींद सुलाऊंगा।

लईकुशहा बेरा

लेखक - योगेश ध्रुव भीम

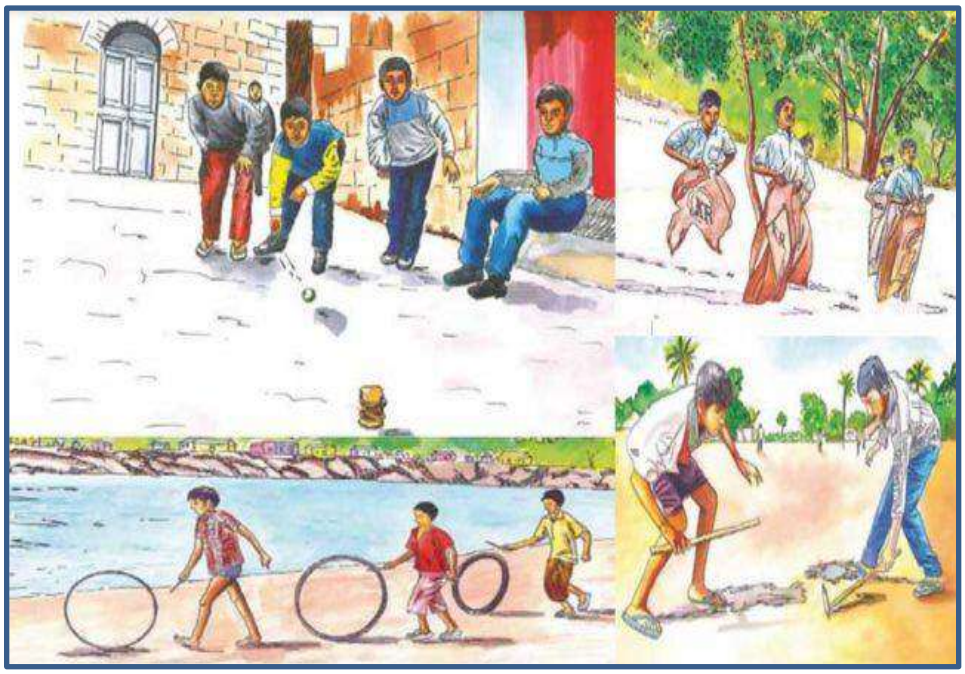

लईकुशहा बेरा

गिल्ली डण्डा

भौरा बाँटी

खेलेन सँगवारी

ये मोर मितानी

आमा आमली

लाटा कूटेंन

जाम ल खाएन

ददा के डर म

कोण्टा म लुकाएन

ये मोर मितानी

तरिया के कुधरी

नरवा के नहवई

मंझनिया के बेरा

लुकउल के खेलई

बबा के चिल्लई

ये मोर मितानी

एन्टीना ल हलादे

टीवी ल चलादे

डण्डा पचरंगा

बिल्लस खेलादे

पीपर मेन्ट खवादे

ये मोर मितानी

ददा के डर म

बबा कर लुकाएन

डोकरी दाई के किस्सा

अउ दाई के मनाउनी

वह मोर लईकुशहा बेरा

मोला तेहर भाये

ये मोर मितानी

शहीदों को नमन

लेखक - नेमीचंद साहू

याद करो कुर्बानी जिनसे

हर ओर शांति-अमन है

उन शहीदों को आज

सौ-सौ बार नमन है

आजादी के फूल खिलाकर

पुलकित हुआ चमन है

उन शहीदों को आज

सौ-सौ बार नमन है

जोश उमंग भरा हुआ

गौरवान्वित गगन है

उन शहीदों को आज

सौ-सौ बार नमन है

सत्य अहिंसा के दम पर

हुआ आजाद वतन है

उन शहीदों को आज

सौ-सौ बार नमन है

शेर आया

लेखक - ध्रुवकुमार महंत

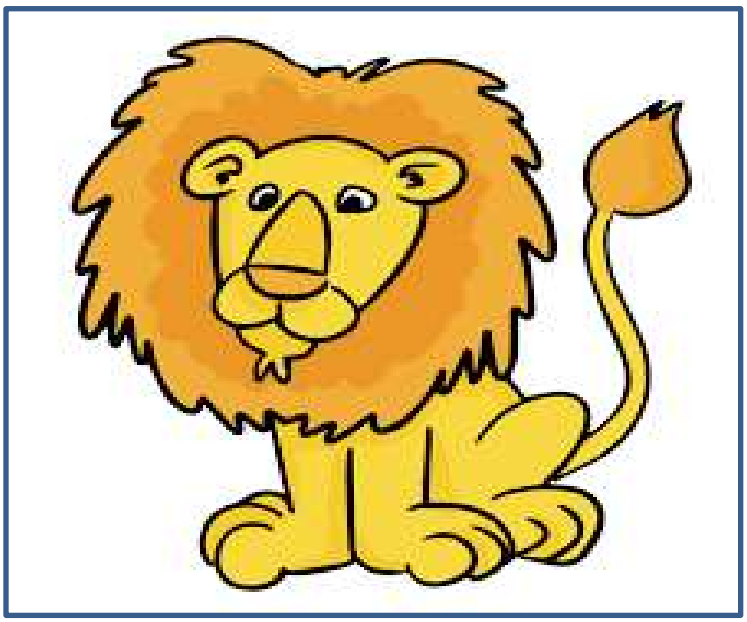

भागो बकरी शेर आया

जंगल है खाली खाली

करो न अब देर कोई

टूट गयी है मोटी जाली

देखो भालू भाग रहा है

शेर पीछे जा रहा है

हिरन को कर देगा ढ़ेर

करो नहीं अब कोई देर

संविधान

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

नहीं किसी से भेदभाव, सब के लिए प्रेम भाव
गरिमा पूर्ण जीवन का, करो अपने मन का
स्वतंत्रता का अधिकार है, न्याय का यहाँ द्वार है
है सब के लिए समाधान, जय हो जय संविधान

राष्ट्रीय संपदा की रक्षा करें, वन्यजीव वृक्ष की रक्षा करें
लड़ो नहीं जात पात में, मिल जुल कर चलो साथ में
देता हौसला आगे बढ़ने का, राष्ट्र के लिए नेक करने का
मेरा देश सबसे महान, जय हो जय संविधान

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई, लड़ो नहीं आपस में भाई
घर-घर में संविधान होगा, जन-जन का समाधान होगा
हम भारती भारतीय धर्म हमारा, सबसे बढ़कर यह ग्रंथ हमारा
करें मिलकर गुणगान, जय हो जय संविधान

हमर जीवन के परान

लेखक - पेशवर राम यादव

जम्मो रुख राइ होथे गा

हमर जीवन के परान

फर फूल पतवा अउ बीजा

में मिलथे जीवनदान

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान

जडी बूटी अव छाला ले

होथे दवई के पहिचान

एकर दवाई बनाथे गा

वैध अउ विव्दान

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान

सिरावत हे बादर ले पानी

करनी में तोर इंसान

रद्दा देखत कब पानी

गिरही जम्मो गा किसान

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान

हरियर हरियर प्रकृती ल

झन बिगाड़ रे नादान

प्रदूषण ले होही जम्मो

गांव- सहर ह हलाकान

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान

झाड़ी जंगल रुख राइ ल

करलव गा सब सम्मान

एकर ले सिखथन अड़बड़

प्रयोग अउ विग्ज्ञान

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान.

एकरे सेती कहिथों संगी

पेड़ लगाओ ये हरे जीवन के आधार

ये देथे हरियाली अउ खुशहाली

ये हरे हमर मितान ..

जिनगी के आधार ल

झन काटो गा सियान ..

चमन ये चमन है ये अपना चमन

लेखक एवं चित्र - त्रिलोकी नाथ ताम्रकार

चमन ये चमन है ये अपना चमन

इस चमन में खिले हैं लाखों सुमन

हर सुमन का कथन है ये मेरा वतन

नहीं सिक्ख ईसाई कोई हिंदू मुसलमान

हर कोई गा रहे गीत वतन का

रंग रूप जाति धरम का संगम

चारों दिशा गूंज रहे जन गण मन

कहे धरती गगन है ये मेरा वतन-मेरा वतन।

घर-घर लहराया देखो प्यारा तिरंगा

ये तो निशां बन गया चैन अमन का

सत्य अहिंसा त्याग प्रेम का परचम

हर कोई बोल रहे वंदे मातरम

कहे धरती गगन है ये मेरा वतन-मेरा वतन

चमन ये चमन है ये अपना चमन

हरियर भुइंया अब भाटा होगे

भानुप्रताप कुंजाम'अंशु'

हरियर भुइंया अब भाटा होगे
जिन्हा उगे धान अब लाटा होगे
ननपन ले खेलिन कुदिन जे कोरा मं
थेमा के बेरा अब बांटा होगे
जिनगी भर करिन अपन मन मन के
सिधांत के गोठ अब चांटा होंगे
सुनावत नईं अब अरा तता
किसान के धंधा अब घांटा होगे
संग खेलिन कुदिन पढ़िन लिखिन दुनो भई
एक दुसर बर अब कांटा होंगे

ईश्वरी कुमार सिन्हा की मधुबनी पेटिंग

संकुल जमगहना बैकुंठपुर कोरिया की अंग्रेज़ी कविता

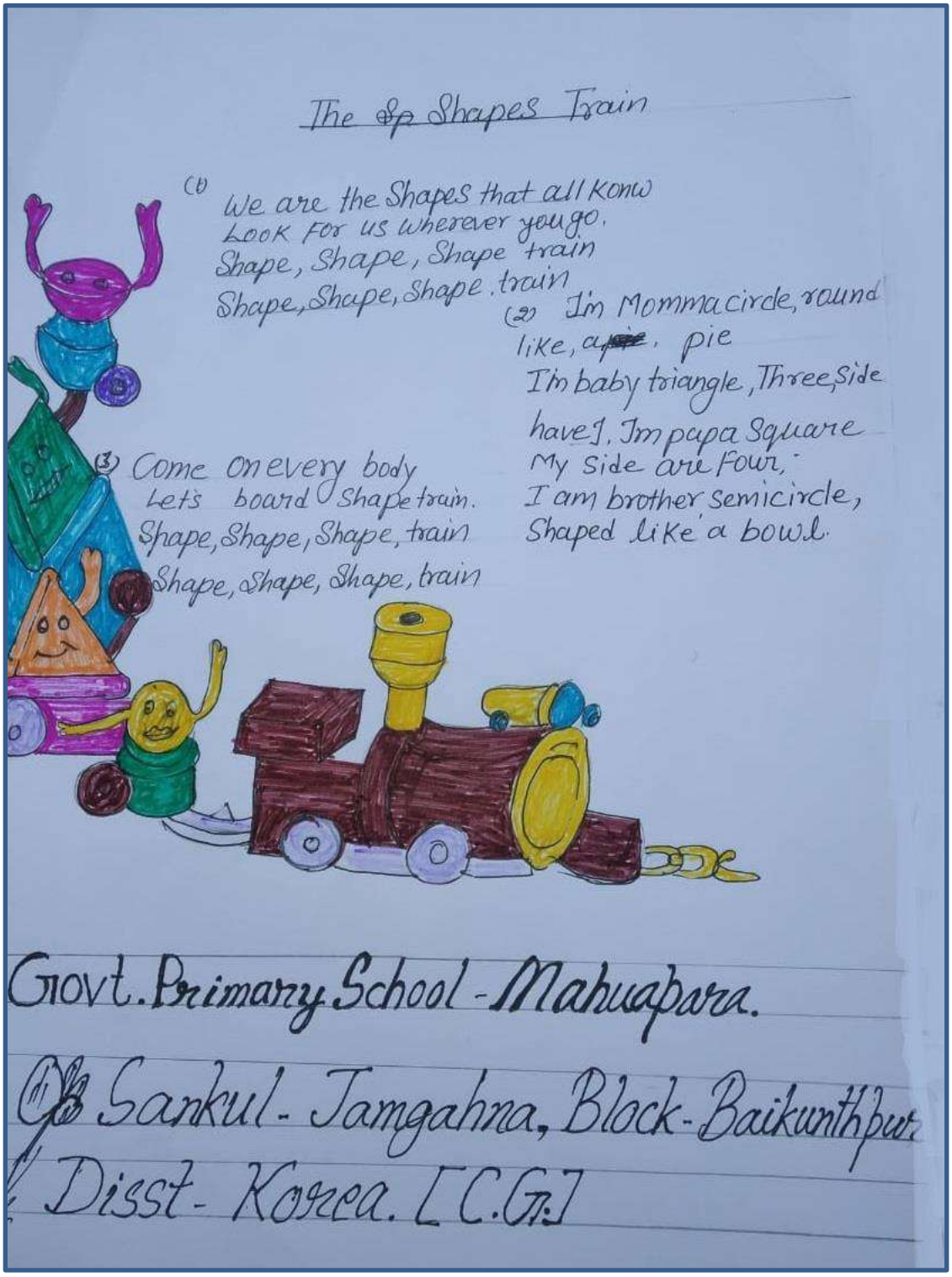

संकुल जमगहना बैकुंठपुर कोरिया की अंग्रेज़ी कविता

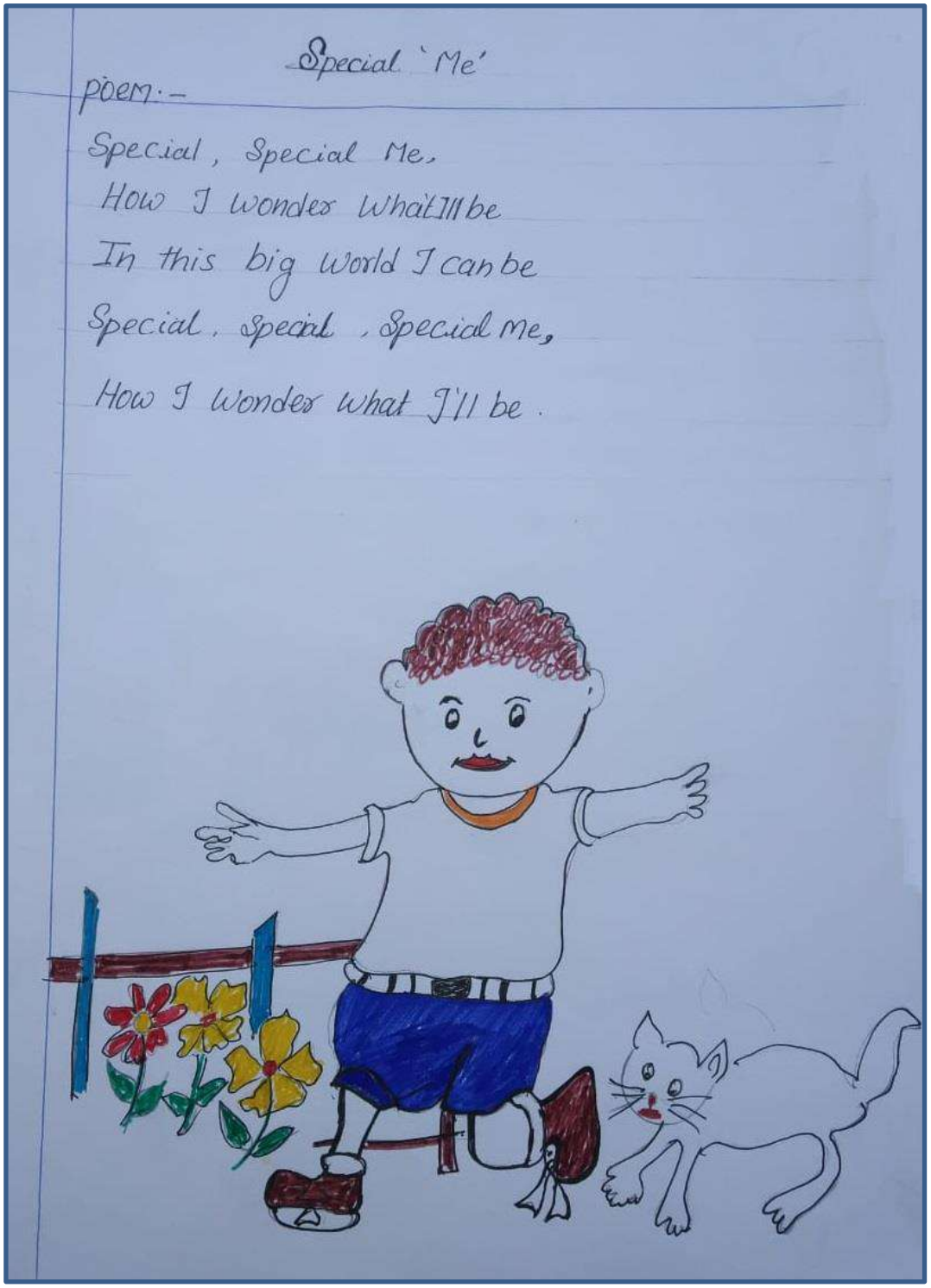

Special 'Me'

poem:-

Special, Special Me,
How I wonder What I'll be
In this big world I can be
Special, Special, Special me,
How I wonder what I'll be.

श्रीमती विभा सोनी की छात्रा दिव्या यादव की कविता और चित्र

श्रीमती विभा सोनी की छात्रा सोनिया सिंह की कविता और चित्र

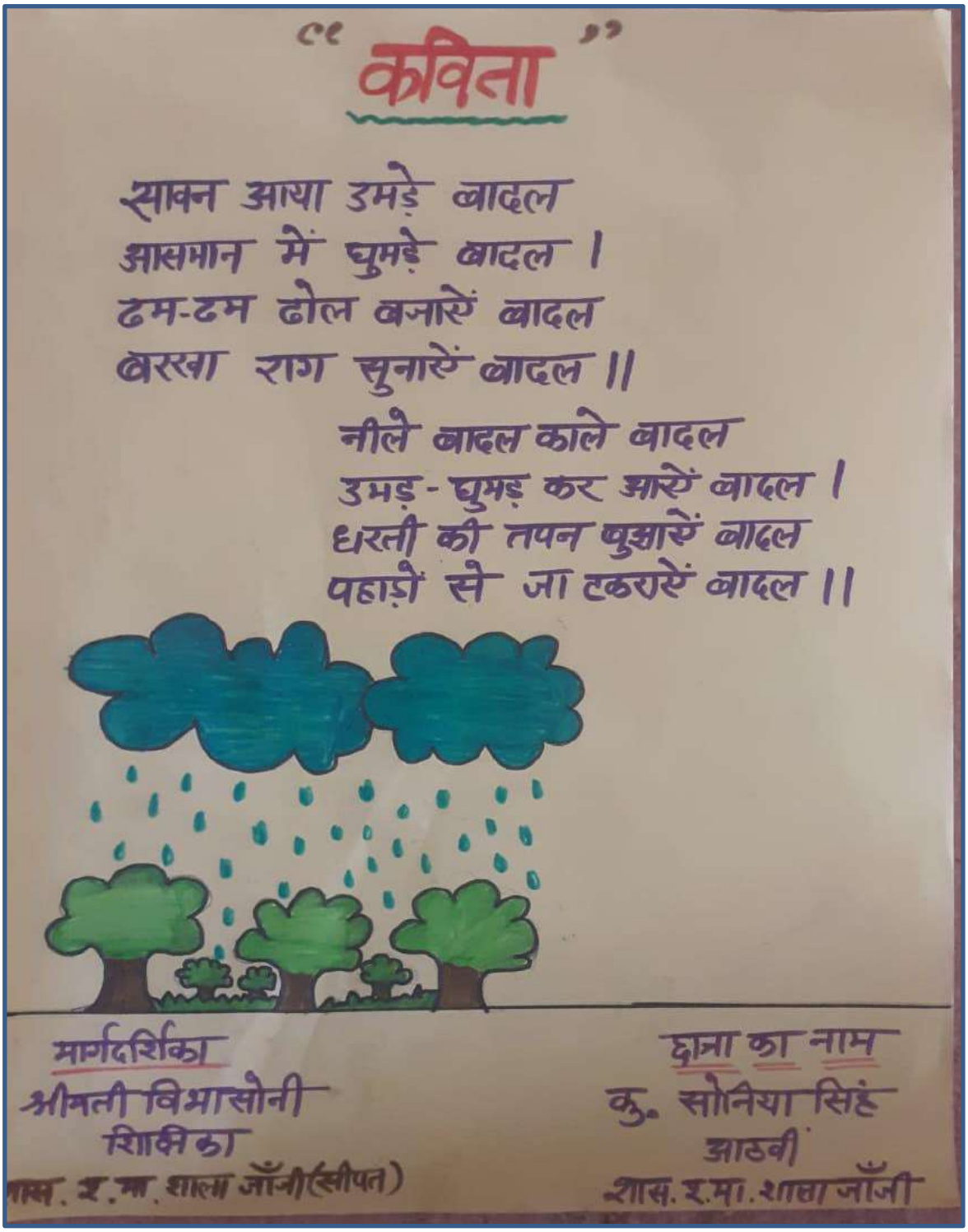

श्रध्दा सूर्यवंशी की पेंटिंग

पहेलियाँ

प्रस्तुतकर्ता - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

1. कुआँ पोखर ताल-तलैया
   जहाँ रहै एक कोतवाल
   चिल्लाता - पानी गिरेगा...
   चौमासे भर हर साल
2. चार पैरों वाला वह
   पर कभी चल न पाता
   लोग उस पर बैठ कर
   अपनी थकान मिटाता
3. तीन अंकों की संख्या चार
   ईकाई-सैकड़ा हैं सम
   दहाई में रहते शून्य
   दो सौ दस से हैं कम
4. Which is the word
   Contains the letters three
   A simple - size black – bird
   Wants to fly night free
5. सुख में पैदा होते
   चाहे दुख भी हो अपार
   हिमगिरि से निकल पड़े
   ज्यों गंग की धार

उत्तर :- 1. मेंढक , 2. कुर्सी , 3. 202, 204, 206, 208, 4. Bat(चमगादड़), 5. आँसू.

आओ हंस लें

एक बार बंता को जोर-जोर से रोता हुआ देख संता ने उस से पूछा;

संता: तुम क्यों रो रहे हो?

बंता: मेरे पडोसी रामू का हाथी मर गया है!

संता: तो तुम क्यों रो रहे हो, क्या तुम उस हाथी से बहुत प्यार करते थे?

बंता: नहीं!

संता: तो फिर तुम क्यों रो रहे हो?

बंता: मुझे उसकी कब्र खोदने का काम मिला है!

पति ने पत्नी से कहा पिछले महीने का हिसाब दो

पत्नी ने हिसाब लिखना शुरू किया और बीच बीच में लिखने लगी भ.जा.कि.गे.

800 भ.जा.कि.गे.

2000 भ.जा.कि.गे.

500 भ.जा.कि.गे.

पति ने पूछा ये भ.जा.कि.गे. की क्या है ?

पत्नी: भगवान जाने किधर गए

पप्पू- पापा मुझे डी.जे. खरीदकर दो।

पापा- नहीं दूंगा तू लोगों को तंग करेगा।

पप्पू- नहीं पापा, मैं किसी को तंग नही करुंगा जब सब सो जायेंगे तभी बजाया करूंगा

भाखा जनउला

रचनाकार - दीपक कंवर

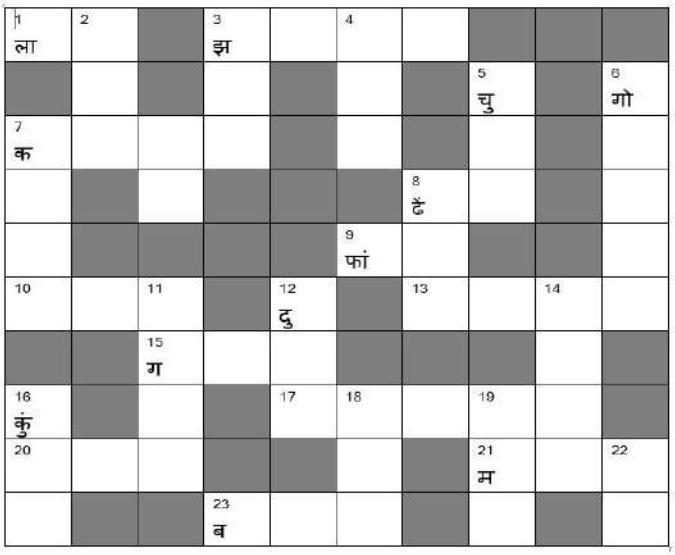

बाएँ से दाएँ: - 1. गोंद 3. तुरंत 7. कड़ाही 8. धान कूटने का 9. भाग / हिस्सा 10. तिथी / लगन 13. बहुत छोटा / छोटी 15. गाय 17. भिंडी 20. बार-बार हारा हुआ 21. मटकी 23. सूअर

ऊपर से नीचे: - 2. सब्बल 3. गोबर कचरा फेंकने के लिए बांस का पात्र 4. कमरा 5. बांस का कटोरा जैसा पात्र 6. डंडे, गोबर, पत्ते का ग्रामीण खेल 7. बड़ी चम्मच 8. खटमल 11. हल चलाने वाला 12. द्वार 14. गन्ना 16. धुआँ 18. महुआ 19. नींबू 22. कीड़ा / कीट

उत्तर

1 ला	2 सा		3 झ	ट	4 कु	न			
	ब		उ		रि		5 चु		6 गो
7 क	र	ई	हा		या		र		ब
र		हा				8 ढें	की		र
छु					9 फां	क			ध
10 ल	गी	11 न		12 दु		13 ना	न	14 कु	न
		15 ग	रु	वा				सी	
16 कुं		री		17 र	18 म	के	19 ली	या	
20 ह	र	हा			उ		21 म	र	22 की
रा			23 ब	र	हा		उ		रा